# चन्दामामा

जून १९७२

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.
सिर्फ़ २५ पैसे
PARLE POPPINS FRUITY SWEETS 25 Paise
नयी पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी —
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां —
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।
पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो
everest/122b/PP hin

# चन्दामामा

संस्थापक नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

'चन्दामामा' का अगला अंक रजतजयंती विशेषांक होगा। चन्दामामा के स्थापित हुए इस मास के साथ पच्चीस वर्ष समाप्त होने को हैं। किसी भी पत्रिका के लिए २५ वर्ष का समय कम नहीं होता! हम मानते हैं कि चन्दामामा के विकास में हमारे पाठकों, एजेंटों तथा लेखकों का सक्रिय सहयोग जुड़ा हुआ है, अतः इस शुभ अवसर पर हम हृदय से सब का अभिनंदन करते हैं और भविष्य में सहयोग की कामना करते हैं।

वर्ष : २४ जून १९७२ अंक : १०

दुष्टा भार्या, शठो मित्रम्
भृत्योहंकारसंयुतः,
ससर्पे च गृहे वासो,
मृत्युरेव न संशयः ॥ १ ॥

[यह निश्चय है कि दुष्ट पत्नी, मूर्ख मित्र, घमण्डी नौकर, साँप का निवास करनेवाला घर जान के लिए ख़तरे हैं, याने त्याज्य हैं।]

यस्मिन् देशे न सन्मानो,
न प्रीति, नंच बांधवाः,
न विद्या, नास्ति धनिको,
न तत्र दिवसं वसेत् ॥ २ ॥

[जिस देश में आदर, प्रेम, रिश्तेदार, विद्या तथा धनी न हों, उस देश में एक दिन भी रहना नहीं चाहिए।]

कुचेलिनम्, दंतमलापहारिणम्,
बह्वाशिनम्, निष्ठुरवाक्यभाषिणम्,
सूर्योदयेचास्तमये च शायिनम्,
विमुंचति श्रीरपि चक्रपाणिनम् ॥ ३ ॥

[मैले वस्त्र धारण करनेवाला, दांत साफ़ न करनेवाला, पेटू, मन को दुखानेवाला, सुबह और शाम को सोनेवाला चाहे भगवान विष्णु भी क्यों न हो, लक्ष्मी उसे त्याग देगी।]

# मानव की प्रकृति

एक गाँव में नित्यानंद नामक एक गरीब किसान रहता था। उसके पास थोड़ी-सी ज़मीन थी। उससे जो कुछ पैदावर होती, वह उसके परिवार के लिए पर्याप्त न थी। इसलिए वह कर्ज लेता गया, मगर चुका न पाया।

एक दिन किसान की पत्नी ने सलाह दी–"हमारे पास यदि खाने को कुछ रहा, तो खा लेंगे, वरना उपवास करेंगे, मगर कर्ज चुकाकर निश्चिंत हो जाना ज़रूरी है।" पत्नी की सलाह के अनुसार नित्यानंद ने अपने खेत बेचना चाहा। गाँववालों ने सोचा कि नित्यानंद मुसीबत में पड़कर खेत बेच रहा है, इसलिए कम दाम में ख़रीदा जाय, इस ख्याल से लोग बहुत कम दाम पर खेत की माँग करने लगे।

उसी गाँव में राजानंद नामक एक दूसरा किसान था। नित्यानंद के बाप-दादों की हालत जब अच्छी थी, उन दिनों में राजानंद के बाप-दादों ने उनसे मदद पायी थी। यह बात राजानंद जानता था। इसलिए उसने अच्छा मूल्य देकर नित्यानंद का खेत ख़रीद लिया।

नित्यानंद ने उस धन से अपना कर्ज चुकाया और वह मज़दूरी करने लगा। यह बात जब राजानंद को मालूम हुई तब उसने नित्यानंद को बुलाकर कहा–"भाई, जब तुम खेत का काम ही करना चाहते हो तो अपने खेत को इकरारनामे पर लेकर क्यों नहीं करते?"

"भाई साहब! यह तो आपकी मेहर्बानी है! मैं समझ नहीं पाता कि आपके इस उपकार को मैं कैसे चुका सकूँगा?" नित्यानंद ने जवाब दिया।

नित्यानंद अब अपने ही खेत का काम देखने लगा। एक दिन जब वह खेत जोत रहा था, तब हल के फाल से कोई चीज़

सुरेश वर्मा
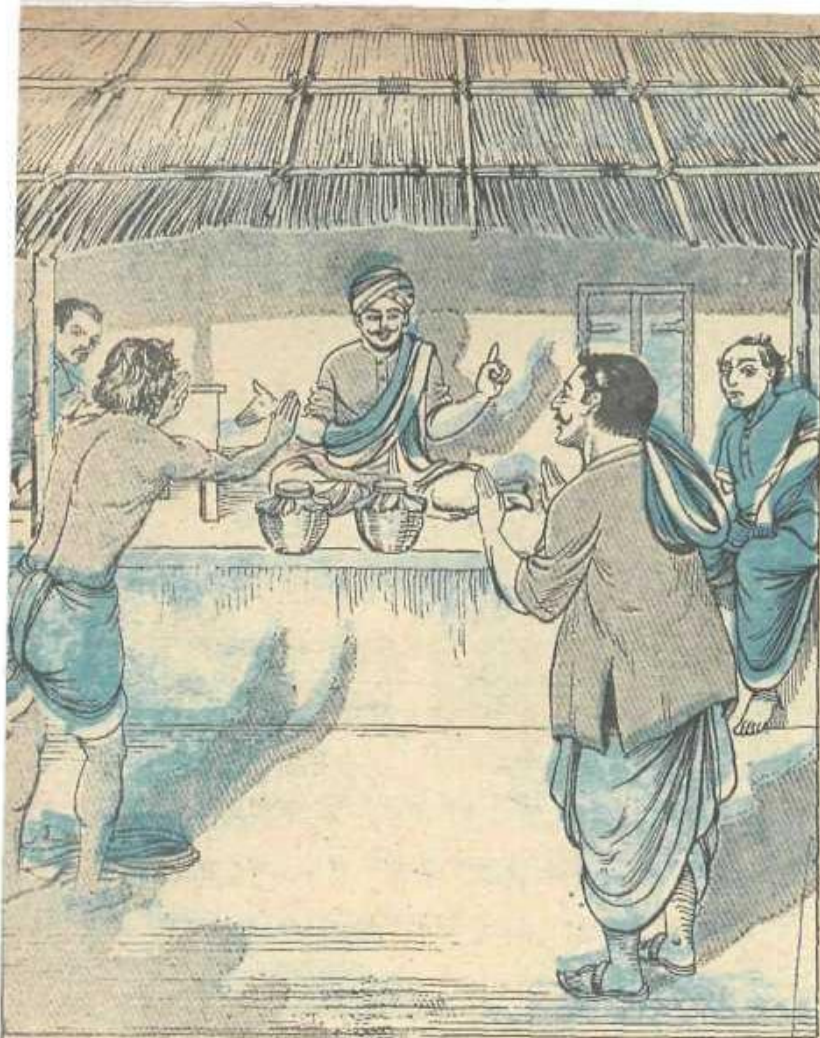
टकरा गयी। नित्यानंद ने खोदकर देखा तो वहाँ पर दो हंडियाँ मिलीं जो सोने के सिक्कों और गहनों से भरी थीं।

नित्यानंद उन हंडियों को उठाकर राजानंद के घर गया और बोला–"भाई साहब, ये दोनों हंडियाँ आपके खेत में मिल गयी हैं। इन्हें आप ले लीजिये।"

राजानंद नित्यानंद की ईमानदारी पर चकित हो बोला–"नित्यानंद, मैं तुम्हारी ईमानदारी की किन शब्दों में तारीफ़ करूँ? इतना सारा धन तुमने अपने लिए नहीं रखा, मुझे ला दिया। दूसरा होता तो न देता। लेकिन यह धन तुम्हारे खेत में मिला है, इसलिए यह तुम्हारा है, मेरा नहीं।"

"भाई साहब, यह आप क्या कहते हैं? मैंने जब यह खेत आपको बेचा, तब यह आप ही का हो गया। मेरा कैसे हो सकता है? इसमें जो भी चीज़ मिले वह आप ही की होगी। आपकी कृपा से में उस खेत का काम देख रहा हूँ। चाहे तो आप यह काम किसी दूसरे से भी करा सकते थे न?" नित्यानंद ने कहा।

"नित्यानंद! मैंने खेत में फ़सल पैदा करने का हक़ खरीद लिया है, मगर क्या उसमें प्राप्त होनेवाले खज़ाने का मूल्य भी मैंने तुम्हें चुकाया है? न्याय का उल्लंघन करूँ तो भगवान भी मुझे क्षमा नहीं कर सकता।" राजानंद ने समझाया।

"मैं भी तो यही बता रहा हूँ। उनमें से मैं एक भी सिक्का लूँ तो क्या भगवान मुझे क्षमा करेगा?" नित्यानंद ने कहा।

जब उन दोनों के बीच समझौता न हो पाया, तब वे गाँव के मुखिये के पास पहुँचे। मुखिये को दोनों ने सच्ची हालत बतायी। उस वक़्त मुखिये का छोटा भाई रामनाथ वहीं पर था।

मुखिये ने दोनों की बातें सुनीं और समझौता करने के ख्याल से बोला–"अरे भाई, इस छोटी-सी बात पर तुम लोग परेशान क्यों? दोनों एक एक हंड़ी ले लो, बस, फ़ैसला हो गया।"

इस पर दोनों ने नहीं माना। दोनों का यही कहना था कि हम एक भी सिक्का नहीं लेंगे। रामनाथ से अब चुप रहा नहीं गया। उसने कहा–"तुम दोनों मेरे कहे मुताबिक़ करोगे तो बड़ी आसानी से तुम्हारा फ़ैसला हो सकता है।"

"कहिये तो!" दोनों ने पूछा।

"तुम दोनों एक एक हंड़ी लेते जाओ और एक महीने तक अपने पास रखो। इसके बाद हम सही फ़ैसला करेंगे।" रामनाथ ने समझाया। इस पर दोनों एक एक हंडी उठाकर अपने अपने घर चले गये।

उनके जाने पर मुखिये ने अपने छोटे भाई से पूछा–"अरे, तुमने यह कैसी सलाह दी? एक महीने बाद वे दोनों मेरे पास आयेंगे तो मैं उनका फ़ैसला कैसे करूँ?"

"एक महीने बाद वे दोनों हमारे पास आ जावे तब न हमें फ़ैसला करना होगा?" रामनाथ ने दृढ़ता भरे शब्दों में कहा।

"क्यों नहीं आयेंगे?" मुखिये ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"एक हफ़्ता सब्र कीजिये! आपको ख़ुद मालूम हो जायगा।" रामनाथ ने कहा।

एक सप्ताह बीत गया। एक दिन की आधी रात को रामनाथ अपने भाई को साथ ले नित्यानंद के घर पहुँचा और घर के बाहर खड़ा हो गया। घर के भीतर से ये बातें सुनाई दीं–"पहले जैसे मैं काम कर नहीं पाता हूँ। बच्चे तो बड़े

होते जा रहे हैं। असल में दोनों हंडियाँ मुझे ही लेनी चाहिये थीं। जिस खेत में हंडियाँ मिलीं, वह खेत मेरा ही तो है। खेत बेचने के पहले वे हंडियाँ मिल जातीं तो कोई झंझट न होती। लेकिन अब मैं दूसरी हंडी भी माँग बैठूँ तो लोग मुझ पर हंसेंगे। इस हंडी के धन से जमीन ख़रीदकर अपने दिन आराम से बितायेंगे। अब और क्या किया जा सकता है।"

इसके बाद रामनाथ अपने भाई को लेकर राजानंद के घर पहुँचा। वहाँ पर आड़ में खड़े हो घर में होनेवाली बातचीत को सुनने लगे। घर में से ये शब्द सुनाई दिये-"नित्यानंद ने जब मुझे दोनों हंडियाँ लेने को कहा, तब मैंने उन्हें न लेकर बड़ी भूल की। जब खेत मेरा हो गया, तब खेत में मिलनेवाला धन भी तो मेरा ही है। नित्यानंद ने उस धन को अपने खेत में थोड़े ही गाड़ रखा है? लेकिन अब मुखिये के पास जाकर दूसरी हंडी भी दिलाने की प्रार्थना करना ठीक न होगा। मुझे इस हंडी के धन से तृप्त होना चाहिये। और कोई दूसरा चारा भी तो नहीं है।" राजानंद कह रहा था।

मुखिया अपने भाई के साथ घर लौटते हुए बोला-"रामनाथ, तुमने बिलकुल सही कहा। अब वे दोनों हमारे पास नहीं आवेंगे। दोनों ने हमारे सामने ऐसी बातें कहीं, मानो न्याय के देवता हो! उनके इस स्वभाव को तुमने कैसे जान लिया?"

"वे दोनों नीतिवान और ईमानदार ज़रूर हैं। यदि ईमानदार न होता तो नित्यानंद वे हंडिया राजानंद को न देता। राजानंद भी नीतिवान था, इसीलिए उन्हें लेने से इनकार किया। अपने सामने धन के ढेर को देख बड़े से बड़े नीतिवान और ईमानदार का स्वभाव भी बदल जाता है। यह मानव की प्रकृति है। उसे बदलने की ताक़त धन में है।"

उस रात को नित्यानंद तथा राजानंद से बातचीत करनेवाले रामनाथ द्वारा नियुक्त व्यक्ति ही थे।

# गणदेवी

हिमालय की तराई में एक घाटी थी। उस घाटी में हज़ारों साल पहले से एक पहाड़ी जाति निवास करती थी। उस जाति के लोग मवेशी पाल कर, तथा अनाज पैदा करके अपनी ज़िंदगी बिताते थे। लेकिन धीरे धीरे उस घाटी में मवेशियों को चराना और खेती करना मुश्किल होता गया। इसका कारण यह था कि हर साल पहाड़ पर से छोटे व बड़े पत्थर घाटी में लुढ़क जाते थे। इस तरह सैकड़ों साल बीत गये, तब लगभग सारी घाटी पत्थरों से भर गयी।

इस कारण फ़सल कम होने लगी। मवेशी कमज़ोर होते गये। अब उस घाटी में ज़िंदगी बिताना उस जाति के लोगों के लिए दूभर हो गया। इस पर उस जाति के कुछ युवकों ने आपस में चर्चा की और अपने नेता के पास जाकर कहा–"दादाजी, अगर हम अपने निवास को यहाँ से न बदले तो चन्द ही दिनों में हम मिट जायेंगे। इसलिए हम इस घाटी को छोड़ दूसरी जगह चले जायेंगे।"

वृद्ध नेता ने उन युवकों की ओर चिंता भरी नजर दौड़ायी और कहा–"अरे, यह घाटी अनादिकाल से हमारी रही है। हमारे दादा-परदादा भी यहीं की मिट्टी में मिल गये हैं। अगर हम दूसरी जगह जायेंगे तो हमारी ज़िंदगी ही बदल जायगी। हम भी बदल जायेंगे।"

"इस तरह हमारी ज़िंदगी को तबाह करने के बदले अपनी ज़िंदगियों को बदल लेना ही कहीं अच्छा होगा, दादाजी!" युवकों ने एक स्वर में कहा।

"अबे, यह घाटी मरी नहीं, इस में ज़िंदगी है। मैं तुम्हें दिखा देता हूँ।" इन शब्दों के साथ वृद्ध ने एक विशाल शिला

रामनाथ बक्षी

को पलटने को कहा। दस युवकों ने मिल कर उस शिला को पलट दिया। उसके नीचे काली मिट्टी दिखायी दी।

"अरे, यह मिट्टी सोना निगलती है। इन सभी शिलाओं के नीचे ऐसी ही मिट्टी भरी पड़ी है।" वृद्ध ने समझाया।

"इस घाटी भर में हज़ारों शिलाएँ हैं। इन सब को हम कैसे हटा सकते हैं? इन्हें कहाँ ले जायेंगे? इसलिए हमारे लिए आपको कोई दूसरी जगह ढूँढनी ही होगी।" युवकों ने हठ किया।

"अच्छी बात है। मैं हमारी गणदेवी की पूजा करूँगा। उनके आदेशानुसार कुछ करूँगा।" वृद्ध ने समझाया।

दूसरे दिन वृद्ध ने अपनी जाति के सभी लोगों को एक जगह इकट्ठा कर कहा—"भाइयो, गणदेवी ने कल रात को सपने में दर्शन देकर मुझे आदेश दिया है कि हम सब मिल कर उस माता के लिए एक बड़ा मंदिर बनावे और उसके चारों तरफ़ अपने घर बनावे।" वृद्ध ने कहा।

वृद्ध की बातें सुनने पर सब का उत्साह उमड़ पड़ा। सब ने शिलाएँ एक जगह इकट्ठी कीं। कुछ ही दिनों में मंदिर उठने लगा। मंदिर के गर्भगृह का पीठ दस बारह हाथ ऊँचा बनाने का वृद्ध ने आदेश दिया। उतनी ऊँचाई तक चट्टानें एक पर एक बिठायी गयीं। तब उस पर मंदिर बनाया गया।

इसके बाद मंदिर के चारों तरफ़ घर बनाये गये। घर बनाने के लिए भी वे ही पत्थर इस्तेमाल किये गये।

इस काम के समाप्त होने पर लोगों ने देखा कि घाटी के तीन चौथाई हिस्सों में मिट्टी निकल आयी है। उसमें बीज बोये गये। सारी मिट्टी फ़सलों से भर गयी। जहाँ पर पथरीली ज़मीन थी, वहाँ पर हरी घास उग आयी।

इस तरह मनुष्य और पशुओं के लिए भी आवश्यक अनाज और घास प्राप्त हो गयी। सब ने पसन्न हो कर अपनी गणदेवी की पूजा-अर्चना की।

# यक्ष पर्वत

सैकड़ों साल पहले नर्मदा नदी के समीप एक जंगल में कई जंगली जातियाँ निवास करती थीं। उनमें प्रत्येक जाति का एक नेता या राजा होता था। वही उस जाति का शासक होता था। उन जातियों के बीच मैत्री न थी, बल्कि जब-तब मौक़ा पाकर वे लोग परस्पर लड़ते भी थे।

ऐसी अनेक जंगली जातियों में गैण्डे की जाति के लोग अरण्यपुर नाम से एक शहर बसाकर उसमें निवास करते थे। वे लोग गैण्डों को पालतू बनाकर उनके द्वारा खेती करते थे और साथ ही उन्हें सवारी के काम में भी लाते थे। इस कारण से वह जाति गैण्डे की जाति नाम से मशहूर हो गयी।

गैण्डे की जाति के नेता का नाम अरण्यमल्ल था जो हाल ही में नेता चुना गया था। उसे अधिकार से हटाने की गणाचारी नामक एक व्यक्ति ने बड़ी कोशिश की, मगर दो क्षत्रिय युवकों की मदद से अरण्यमल्ल ने गणाचारी के कपट को प्रकट किया और उसे शेरों का आहार बनाया।

गणाचारी की मौत के बाद अरण्यमल्ल का शासन शांति के साथ चलने लगा। पहले इस जाति के लोग सिर्फ़ शिकार खेलकर अपने पेट भरते थे, लेकिन अब आसपास के जंगली प्रदेश को समतल बनाकर ज्वार और गेहूँ भी पैदा करने लगे थे।
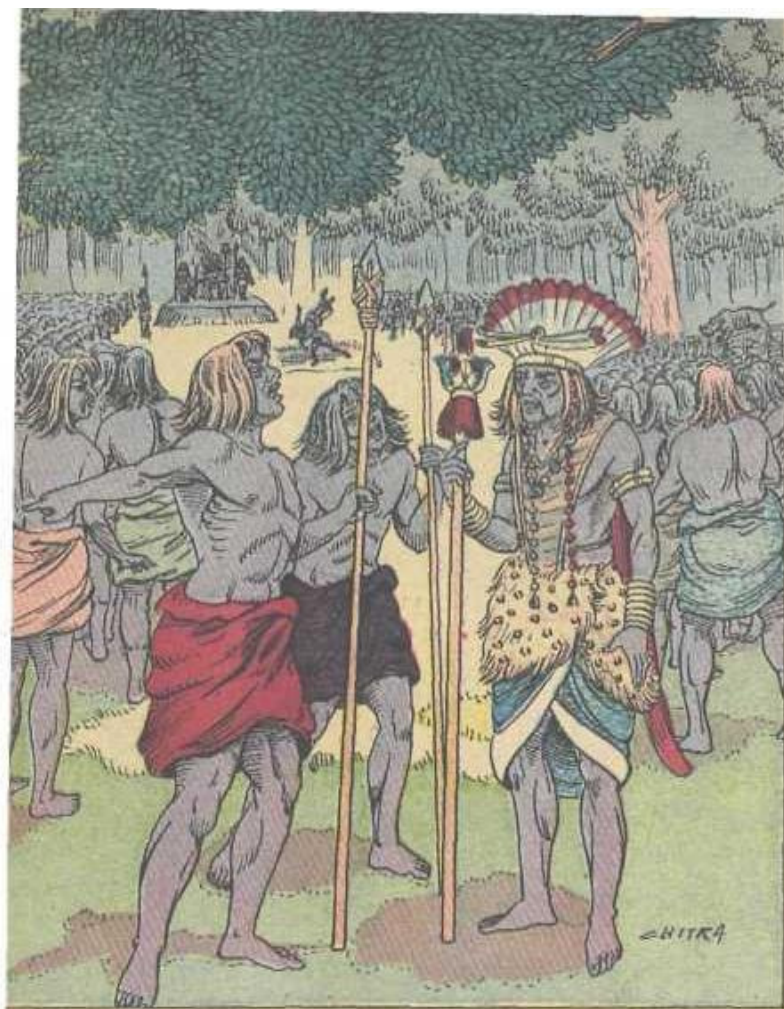
अरण्यमल्ल को गद्दी पर बैठे एक साल पूरा हो चुका था, इसलिए उस जाति के लोगों ने उस दिन वार्षिकोत्सव का आयोजन किया था। तलवार और भाले चलाते कुछ युवक लोगों का मनोरंजन कर रहे थे, तो कुछ लोग गैण्डों को ऊँचे मसानों पर से कुदवाते थे, कुछ युवक मल्ल युद्ध करते हुए अपनी वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे। उस उत्सव को देखने स्त्री-पुरुष, बच्चे और बूढ़े जमा हुए थे। अरण्यमल्ल नक्काशी की गयी शिलाओं द्वारा निर्मित एक सिंहासन पर बैठे ये प्रदर्शन देख रहा था। इकट्ठी हुई भीड़ में उत्साह उमड़ रहा था, तभी दो युवक अपने-अपने वाहनों पर सवार हो तेजी से उतर कर भीड़ को चीरते हुये अरण्यमल्ल की ओर बढ़े।

अरण्यमल्ल के मंत्री का नाम शिलामुखी. था। उसने उन युवकों को अरण्यमल्ल की ओर बढ़ते देख रोका और क्रोध पूर्ण स्वर में बोला–"अरे बात क्या है? तुम दोनों राजा की ओर दौड़ते क्यों हो? इस उत्सव के समय राजा से तुम्हारा कौन-सा काम आ पड़ा है? मैं मंत्री जो हूँ–मुझसे क्यों नहीं कहते? मैं तुम्हें राजा से मिलने नहीं दूँगा। यह तो हमारे नियमों के विरुद्ध है! तुम्हें राजा से जो कुछ कहना है, वह मुझसे कहो, समझें?"

शिलामुखी के ये शब्द सुनकर दोनों युवक डर गये और थर थर काँपते हुए उसे प्रणाम करके मौन खड़े रह गये।

"अरे, बात क्या है? बताते क्यों नहीं? क्या मूक हो गये हो?" शिलामुखी ने पूछा।

ये सवाल सुनकर दोनों युवक एक दूसरे के चेहरे की ओर ताकने लगे। तब उनमें से एक ने कहा–"सरकार, पहाड़ी नाले के बाजूवाले ज्वार के खेतों से जो लोग भुट्टे तोड़ रहे हैं, वे लोग हमारे परिचित जंगली नहीं हैं। उनके सरों पर बड़ी-बड़ी पगड़ियाँ हैं। सारे बदन को लपेटते कपड़े पहने हुए हैं। सब से बड़ी अनोखी बात यह

है, कि वे लोग अपने साथ नये क़िस्म के जानवरों को हाँक ले आये हैं। उन जानवरों को तो हमने कभी नहीं देखा। उन्हें देख हम तो मारे डर के भाग आये हैं। हमारे दुश्मन उन पर भुट्टे लाद रहे हैं।"

"वे नये जानवर क्या हैं?" शिलामुखी ने पूछा।

"वे तो देखने में हाथी जैसे ऊँचे हैं, मगर उनके पैर पतले हैं, उनकी गर्दनें तो बक की गर्दन जैसे लंबी और टेढ़ी हैं, पीठ पर ऊँचा मूपुर है। वह तो एक बड़ा भारी जानवर है। देखते ही बनता है, सरकार!" एक ने जवाब दिया।

उनकी बातचीत सुनने के लिए गैण्डे की जाति के कुछ लोग उनके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। उन विचित्र जानवरों का वर्णन सुनते ही उनमें से कुछ लोग घबरा गये। वे लोग भीड़ के बीच दौड़ते हुए चिल्लाने लगे-"किन्हीं विचित्र जानवरों पर आये हुए दूसरे नगर के लोग हमारी फ़सलों को काटते जा रहे हैं!"

मनोरंजन के कार्यक्रम में निमग्न लोगों के बीच भगदड़ मच गयी। इसलिए राजा अरण्यमल्ल अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से चिल्ला उठा-"यह कैसी वदतमीज़ी है? यह हलचल ही

क्यों? क्या हुआ है? मंत्री शिलामुखी कहाँ?"

इस पर शिलामुखी उन विचित्र जानवरों को देख आये हुए उन दोनों व्यक्तियों को राजा अरण्यमल्ल के पास ले गया और उनके द्वारा सुनी हुई सारी बातें कह सुनायीं।

"हमने मेहनत उठाकर जो फ़सलें पैदा कीं, उन्हें लुटरों को लूटकर ले जाते देख तुम लोग उन पर हमला किये बिना उन विचित्र जानवरों के प्रति आश्चर्य प्रकट करते हो? मैंने यह नहीं सोचा था कि मेरी प्रजा ऐसी कायर है! कोई सुने तो हँसे! तुम लोगों ने हमारे राज्य की मर्यादा

मिट्टी में मिला दी। हूँ, नाम के वास्ते में राजा हूँ और मेरे एक मंत्री भी है। मगर हमारा व्यवहार तो अभी जंगलियों जैसा ही है। ऐसी हालत में मेरी समझ में नहीं आता कि हमने इसे एक राज्य ही क्यों माना?" अरण्यमल्ल ने क्रोध से कहा।

अरण्यमल्ल के मुँह से ये शब्द सुनकर शिलामुखी भीड़ की ओर घूमकर बोला– "फिलहाल मनोरंजन के ये कार्यक्रम बन्द कर दो। लुटेरे हमारी फ़सलों को लूटते जा रहे हैं। उनका वध करके हमें अपनी फ़सलों की रक्षा करनी है। तुम लोग अपने अपने हथियारों के साथ अभी तैयार हो जाओ। हम दुश्मन के छक्के छुड़ाकर ही दम लेंगे।"

इसके तुरंत बाद गैण्ड़े की जाति के कई लोग तलवार और भाले लेकर चल पड़े। कुछ लोग गैण्ड़ों पर सवार हुए। मंत्री शिलामुखी भी एक गैण्ड़े पर सवार हो सबसे आगे निकल पड़ा। उसके पीछे सैकड़ों लोग कोलाहल करते चल पड़े। वह दृश्य ऐसा प्रतीत होता था, मानों युद्ध के लिए सशस्त्र सेना व्यूह बना कर जा रही हो।

राजा अरण्यमल्ल उनका उत्साह बढ़ाते हुए बोला–"उन लुटेरों के विचित्र जानवरों को देख तुम लोग मत डरो। इस दुनिया में हमारे वाहन गैण्ड़ों से बढ़कर कोई भयंकर जानवर नहीं है। हमारी फ़सलों की रक्षा ही नहीं करनी है, बल्कि उन लुटेरों में से कुछ लोगों को बन्दी बनाकर ले आओ। उनके द्वारा हम उन दुष्टों के रहस्यों का पता लगा सकते हैं।"

"अरण्यमाता की जय! राजा अरण्यमल्ल की जय!" चिल्लाते गैण्ड़े की जाति के लोग पहाड़ी नाले की ओर दौड़ पड़े।

लुटेरों तथा उनके विकृत जानवरों को देख जैसे गैण्ड़े की जाति के लोग डर गये, उससे भी बढ़कर लुटेरे गैण्ड़ों पर सवार हुए लोगों को देख भयभीत हो गये। वे

लोग गैण्ड का नाम तक सुनकर डरते थे, जिस पर गैण्डे को पालतू बनानेवाले उनकी नज़र में महाभयंकर थे। इसलिए उनकी हिम्मत टूट गयी, वे सब भाग जाने की सोच रहे थे।

लुटेरों में से एक व्यक्ति ने भाले को ऊपर उठाकर उच्च स्वर में कहा–"हमारे सामने आनेवाले उन भयंकर जानवरों और उन पर स्वार हुए जंगलियों को देखो! गैण्ड़ों को अपने वाहन बनानेवाले ये लोग न मालूम कैसे साहसी होंगे। ये लोग शायद गैण्डों से भी खतरनाक आदमी होंगे।"

यह चेतावनी सुनकर फ़सल काटनेवाले लुटेरों ने सर उठाकर देखा। गैण्ड़े पर सवार मंत्री शिलामुखी तथा उसके पीछे आनेवाले और लोग उन्हें दिखाई दिये। सबसे पीछे आये गैण्डे की जाति के कुछ लोग दूर खड़े भयकंपित हो लुटेरों की ओर ताक रहे थे।

लुटेरों का नेता जल्दी जल्दी एक विचित्र जानवर पर सवार हुआ और गैण्ड़े की जाति के लोगों की ओर ध्यान से देखने लगा। उन लोगों का रवैया देख लुटेरों के नेता ने समझ लिया कि वे लोग उसके दल पर हमला करने से हिचकिचा रहे हैं। क्योंकि उनकी ओर एक भी व्यक्ति ने अपने वाहन को आगे नहीं बढ़ाया। बल्कि वे अवाक जहाँ के तहाँ खड़े रह गये थे। यदि उनमें हिम्मत होती तो वे कोलाहल करते उन पर टूट पड़ते!
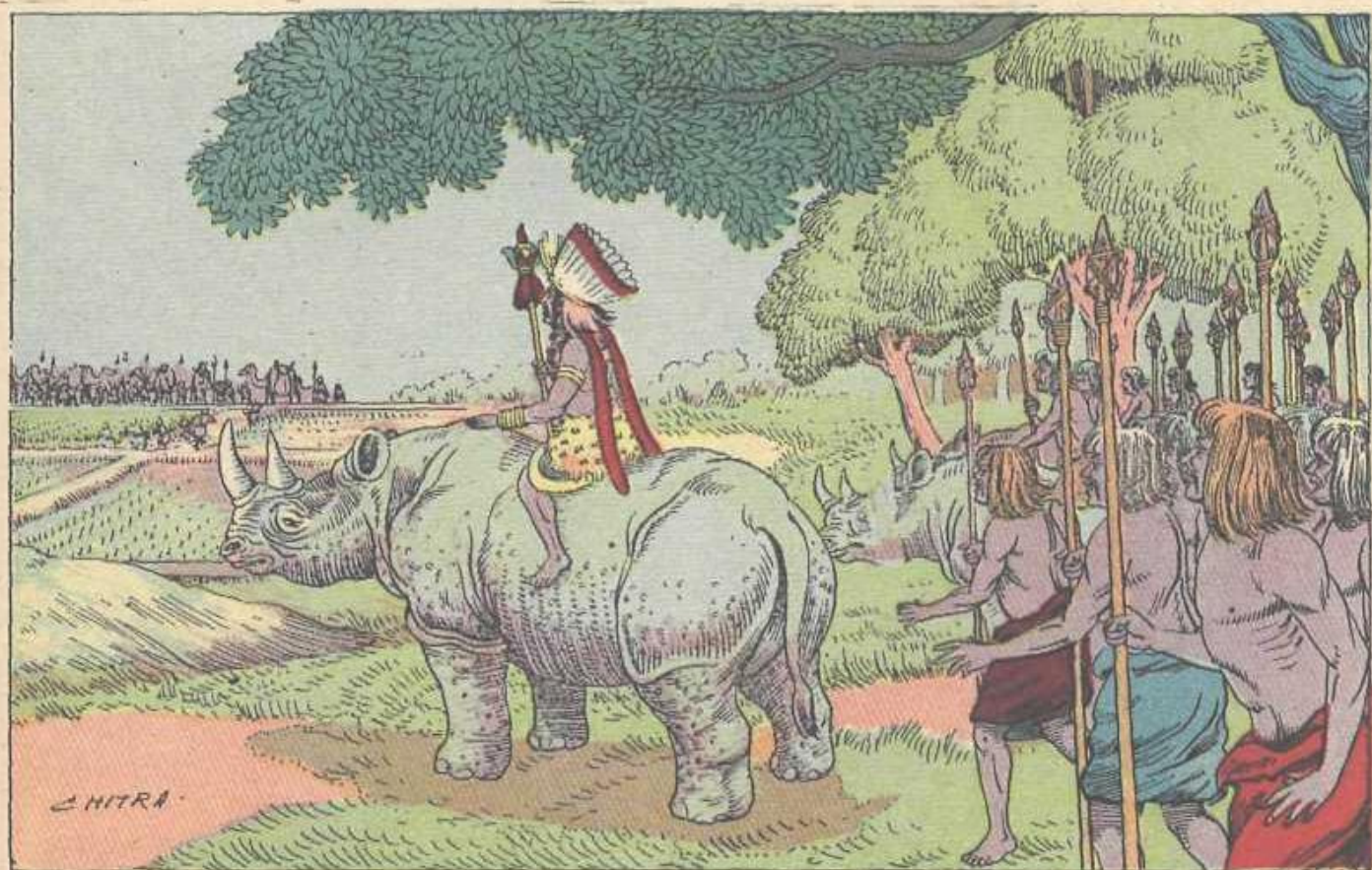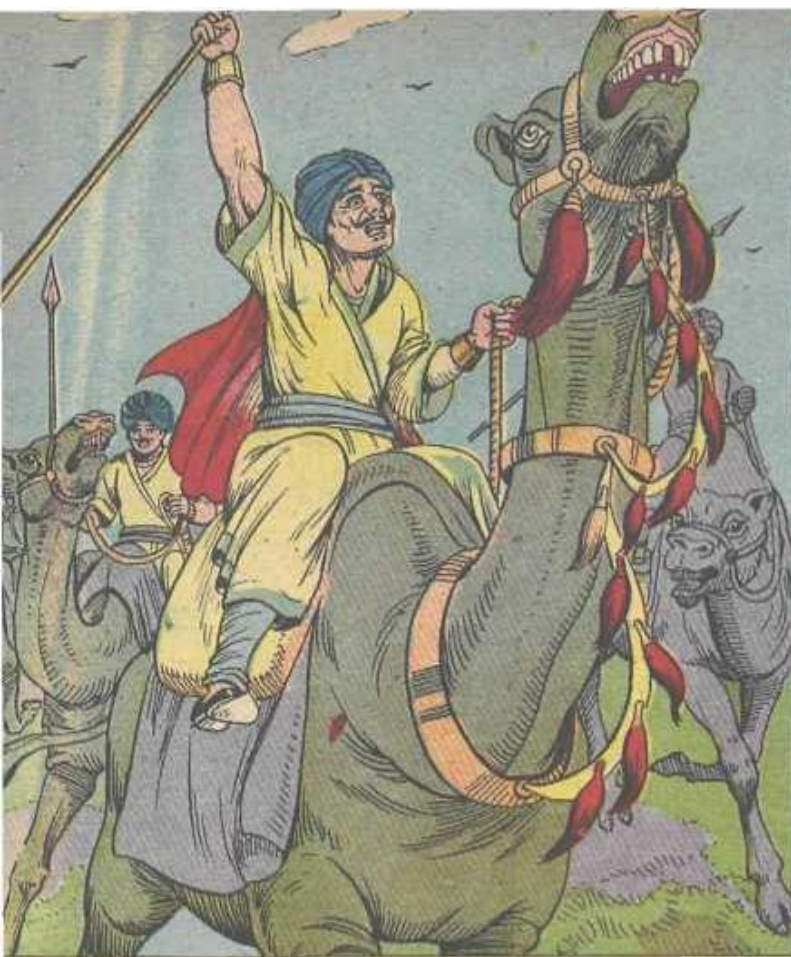
उनका हमला न करने का मतलब यह होगा कि उनके मन में डर पैदा हो गया है। इसका तो फ़ायदा उठाना चाहिये।

"अरे ऊँट-वीरो! हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। ये गैण्ड़ेवाले हमें देख कांप रहे हैं। देखते हो न? एक भी हिम्मत करके हमारी ओर बढ़ नहीं रहा है! सब लोग घबराये हुए सकुचाते हैं। यह हमारे लिए बढ़िया मौक़ा है। मेरे साथ तुम में से चार-पांच लोग चलो। हम उन्हें घेरकर भाले फेंकते हुए भगा देंगे।" लुटेरों के नेता ने समझाया।

अपने नेता की चेतावनी पाकर चार-पांच लुटेरे अपने अपने वाहनों पर सवार हो भाले चमकाते हुए गैण्ड़े की जाति के लोगों की ओर बढ़े। उन्हें देख मंत्री शिलामुखी डर के मारे काँप उठा और अपने अनुचरों की ओर मुड़कर बोला–"ये लुटेरे अपने ऊँचे वाहनों पर सवार हो बड़ी आसानी से हम पर भालों का प्रहार कर सकते हैं! हमारा उनके निकट जाना ख़तरे से खाली नहीं है। हम लोग झट वापस मुड़कर निकट के पेड़ों के पास चले जायेंगे। लुटेरे हमारा पीछा करेंगे तब हमारे अनुचार जो पेड़ों की डालों में छिपे बैठे होंगे, वे लुटेरों पर आसानी से भाले फेंककर उन्हें भगा सकते हैं। हमारे अनुचरों को जल्द पेड़ों पर चढ़ जाने को कह दो।"

शिलामुखी ने यह चेतावनी देरी करके अपने अनुचरों को दी। मंत्री के मुँह से यह चेतावनी सुनकर दो योद्धा अपने वाहनों को मोड़कर चिल्ला उठे–"जो लोग पैदल आये हैं, वे पेड़ों पर चढ़ जाइये! लुटेरों के पेड़ के नीचे आते ही उन पर भाले फेंक दीजिये।"

गैण्ड़े की जाति के कुछ लोग पेड़ों पर चढ़ने लगे। उनकी चाल को भांप कर लुटेरों का नेता बोल उठा–"अरे साथियो, तुम लोग ज्वार के भुट्टों को तोड़ना छोड़कर सब अपने अपने वाहनों पर सवार

हो जाओ। दुश्मन का खातमा करेंगे। पेड़ पर चढ़नेवाले लोगों पर पहले हमला कर दो। इस बात का ख्याल रखो कि एक भी दुश्मन बचकर भाग न जावे।"

इसके बाद शिलामुखी अपने वाहन को घुमा ही रहा था तभी लुटेरों का नेता तथा उसके अनुचरों ने आकर गैण्ड़े की जाति के लोगों को घेर लिया। शिलामुखी लुटेरों के नेता के प्रहारों को बचाते हुए चिल्ला उठा–"अरण्यमाता की जय! तुम सब पेड़ों की ओर गैण्ड़ों को दौड़ा दो।"

शिलामुखी के सभी अनुचर अरण्यमाता की जयकार करते पेड़ों की ओर दौड़ पड़े। शिलामुखी सबसे पीछे रह गया, फिर भी युक्ति से लुटेरों के नेता के प्रहारों से अपने को बचाते हुए चिल्ला पड़ा–"पेड़ों पर से लुटेरों के कलेजे में भाले चुभो दो।"

शिलामुखी अपने प्राण बचाने के प्रयत्न में निमग्न था, इसलिए उसने इस बात का ध्यान न दिया कि पेड़ों के पास क्या हो रहा है! वहाँ पर पेड़ों पर चढ़नेवाले गैण्ड़े की जाति के लोगों पर लुटेरों ने भाले चलाना शुरू किया। कुछ लोग घायल हो नीचे गिर पड़े और बाक़ी लोग चिल्लाते हुए अरण्यपुर की ओर भाग खड़े हुए।

शिलामुखी भी किसी तरह अपने को बचाते हुए पेड़ों की ओर भाग गया, मगर वहाँ कुछ और लुटेरों ने उसे घेर लिया।

हालत नाज़ुक थी। इसलिए शिलामुखी ने अपने अनुचरों को सचेत किया–"भाइयो, हम अब इन लुटेरों का सामना नहीं कर सकते। अरण्यपुर की ओर भागना ही उचित होगा।"

उस वक़्त निकट के एक पेड़ की शाखाओं में से उसे ये शब्द सुनायी दिये–"महामंत्री शिलामुखी! भाग मत जाओ। तुम अपने गैण्ड़े को घुमाकर तुम्हारे पीछे आनेवाले ऊँट पर हमला कर दो। तुम्हारे गैण्ड़े के सींग के तेज़ के सामने इन्द्र के वज्रायुध का तेज़ भी फीका है।"

शिलामुखी ने उस आवाज़ को पहचान लिया। उसे यह समझते देर न लगी कि वह स्वर क्षत्रिय युवकों के साथ रहनेवाले स्वर्णाचारी का ही है। मगर शिलामुखी के भीतर इतनी हिम्मत न थी कि वह भागना छोड़ दुश्मन का सामना कर सके, इसलिए उसने गैण्ड़े को हांका और वह अपने अनुचरों के साथ अरण्यपुर की ओर भाग खड़ा हुआ।

स्वर्णाचारी ने जो चेतावनी दी, उसे शिलामुखी के साथ लुटेरों के नेता ने भी सुनी। उसे बड़ा क्रोध आया। स्वर्णाचारी जिस पेड़ पर चढ़ा था, वहाँ जाकर उसने ललकारा–"तुम कौन हो? मेरे दुश्मन को युक्ति बताते हो? जानते हो, मैं कौन हूँ?"

"मेरा नाम स्वर्णाचारी है, मैं पद्मपुर का वास्तुशास्त्री हूँ। जन्म से ही कायर ऊँट को देख पौरुष रखनेवाले गैण्ड़े को भागते देख मैं सहन नहीं कर पाया, इसलिए मैंने शिलामुखी को ऐसी सलाह दी। मेरे लिए तो तुम दोनों जातिवाले मित्र ही हों।" स्वर्णाचारी ने डालों पर बैठे-बैठे जवाब दिया।

"ओह! तुम तो बड़ी अक्लमंदी का परिचय देते हो! जल्दी पेड़ से उतर आओगे या निशाना देखकर तुम पर भाला फेंक दूँ?" इन शब्दों के साथ लुटेरों के नेता ने ऊँट पर खड़े हो भाला ऊपर उठाया। (और है)

# परिवर्तन

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम्हारी लगन को देख जहाँ आश्चर्य होता है, वहाँ संदेह भी होता है कि तुम्हारी यह लगन अचानक एक दिन शिथिल पड़ जायगी। क्यों कि भगवान के प्रति बड़ी आस्था रखनेवाला धर्मदास भी पलभर में नास्तिक बन गया है। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: कलिंग देश में धर्मदास चिकित्सा करने में बड़ा मशहूर था। वह अनेक अद्भुत चिकित्साएँ करके अपर धन्वंतरी कहलाया। वह शिवजी का परम भक्त था। दिन-रात शिव मंदिर में रहा करता था। उससे कोई काम आ

## वेताल कथाएँ

पड़ता तो लोग उससे मिलने शिव मंदिर में ही जाया करते थे।

धर्मदास के तो पत्नी, बच्चे और घर-गृहस्थी तो थी, मगर वह कभी एक बार घर आ पहुँचता और चला जाता। उसे गृहस्थी की चिंता न थी। एक बार उसने एक धनी व्यक्ति की चिकित्सा करके उसे मृत्यु के मुँह में जाते बचाया। इस पर प्रसन्न हो उस धनी व्यक्ति ने अपनी पुत्री का विवाह धर्मदास के साथ किया था और उनके रहने के लिए एक अच्छा महल बनवा कर दिया था।

धर्मदास अपनी पत्नी को चाहता था। उसके बच्चे भी थे। मगर गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ने पर भी उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह सदा शिव-मंदिर में बैठा रहता, वहीं पर मरीज़ों का इलाज करता, धन कमाता, पर वह धन घर न पहुँचता, शिव-मंदिर में आने वाले गरीब शिव-भक्तों में वह धन बांट देता। इलाज करने से उसे फ़ुरसत नहीं मिलती, इसलिए कई दिनों तक वह घर भी जा नहीं पाता। कभी पत्नी धन की माँग करती तो अपने पास बचा हुआ धन देकर भेज देता।

धर्मदास की पत्नी यशोधरा स्वाभिमानिनी थी। पति की सहायता के बिना उसे अकेले गृहस्थी तथा बच्चों का पालन करना बड़ा कठिन मालूम हुआ। आखिर वह ऊब गयी और एक दिन अपने घर को यशवंत

नामक एक धनी के हाथ बेच कर बच्चों को साथ ले अपने मायके चली गयी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि इस घटना का प्रभाव धर्मदास पर न पड़ा।

यशोधरा का घर जिस अमीर ने ख़रीदा था, वह पक्का नास्तिक था। भगवान का नाम सुनकर वह खीझ उठता था। किसी भी देवता को प्रणाम किये बिना ही उसने करोड़ों रुपये कमाये थे। चिकित्सा करने में धर्मदास जैसे कुशल था, वैसे यशवंत व्यापार करने में दक्ष था। वह मिट्टी का भी स्पर्श करता तो वह सोना बन जाती।

यशवंत के दो पत्नियाँ थीं, मगर दोनों निस्संतान ही मर गयीं। तब उसने तीसरी शादी कर ली। तीसरी पत्नी जब गर्भवती हुई, तब उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। जब उसकी पत्नी ने उससे कहा कि मैं भगवान की कृपा से ही गर्भवती हो गयी हूँ, तब यशवंत ने झट जवाब दिया–"तुम चाहे इसे भगवान की कृपा ही मानो, मगर मैं भगवान की कृपा पर विश्वास नहीं करता।"

यशवंत की पत्नी ने नौ मास तक गर्भधारण के बाद एक पुत्र का जन्म दिया, मगर वह शिशु मरा हुआ पाया गया। उस शिशु में कोई चेतना न थी, लेकिन दिल की धड़कन चालू थी।

"इस शिशु को धर्मदास ही ज़िंदा कर सकता है, दूसरा कोई नहीं।" यशवंत के रिश्तेदारों ने समझाया।

धर्मदास के प्रति यशवत की बड़ी बुरी धारणा थी। उसकी दृष्टि में धर्मदास मूढ़ भक्त और गृहस्थी न चला सकनेवाला असमर्थ व्यक्ति था। फिर भी उसने इस विचार से धर्मदास को अपने घर बुलाने का अपने रिश्तेदारों से आग्रह किया कि शायद उसकी एक मात्र संतान बच जाय!

यशवंत के रिश्तेदारों ने शिव मंदिर में जाकर धर्मदास को सारा समाचार सुनाया और अपने साथ चलने का अनुरोध किया।

"मैं उस नास्तिक के घर नही चलूंगा। यदि वह शिवलिंग के सामने साष्टांग दण्डवत करके अपने अपराधों के लिए क्षमा मांग ले तो मैं उसके शिशु का इलाज करूँगा। इसके बाद परमशिव की जैसी कृपा होगी, वैसा होगा।" धर्मदास ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया।

यशवंत अपने शिशु को लेकर शिवमंदिर में गया। शिशु को धर्मदास के चरणों पर डालकर शिवलिंग के सामने साष्टांग दण्डवत किया और अपने अपराधों के लिए क्षमा भी मांग ली। यह सब उसने धर्मदास को संतुष्ट करने के लिए ही किया था, मगर उसके मन में ईश्वर के प्रति आस्था न थी।

धर्मदास ने अपनी थैली में से कोई दवा निकाली, उसे पानी में घोल कर शिशु के मुँह पर मल दिया। तुरंत वह बच्चा हाथ-पैर मारते ज़ोर से रो पड़ा। इस घटना को देख वहाँ पर उपस्थित लोग विस्मय में आ गये।

उसी समय यशोधरा रोते-बिलखते अपने तीसरे बच्चे को कंधे पर डाल आ पहूँची और उस बच्चे को अपने पति के चरणों में रखते हुए बोली-"मेरे इस बच्चे को बचाइये।"

धर्मदास ने बच्चे की नाड़ी की जांच करके उसके मुँह में एक गोली डाल दी। बच्चे ने एक बार आँखें खोलीं और अपनी माँ की ओर देख कर प्राण त्याग दिये।

यशवंत ने झट शिवलिंग के सामने साष्टांग दण्डवत करके बच्चे के प्राण

बचाने की दीनतापूर्वक प्रार्थना की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा।

इस पर धर्मदास ने अपनी दवाइयों की थैली शिवलिंग पर दे मारी और कहीं चला गया। फिर उसने कभी मंदिर के भीतर क़दम न रखा। इसके बाद एक दिन उत्सव के समय उसने भगवान की मूर्ति पर पत्थर फेंका, तब लोगों ने सोचा कि उसका मतिभ्रमण हो गया है।

बेताल ने यह कहानी सुना कर कहा–"राजन, परम भक्त धर्मदास का अचानक नास्तिक होने तथा परम नास्तिक यशवंत के मन में भगवान के प्रति विश्वास पैदा होने के कारण क्या हैं? क्या मानव केवल स्वार्थवश ईश्वर पर विश्वास करते हैं? इस प्रश्न का समाधान जानकर भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"मनुष्य स्वार्थ के विना किसी पर विश्वास नहीं करता। यशवंत का विश्वास ईश्वर पर इसलिए जम गया कि उसका पुत्र बच गया है। इसी प्रकार के स्वार्थ से धर्मदास विश्वास करता आया है। अपने इलाज पर उसका कभी विश्वास नहीं रहा है। उसका यह भ्रम था कि वह केवल नाम मात्र के लिए चिकित्सा कर रहा है और ईश्वर के अनुग्रह से रोगी स्वस्थ हो रहे हैं। ऐसे स्वार्थ के वशीभूत होने के कारण ही उसके पुत्र के मरने पर ईश्वर के प्रति उसका विश्वास उठ गया। उसने यह नहीं सोचा कि उसके पुत्र की मृत्यु का कारण उसकी चिकित्सा का दोष है, बल्कि उसने ईश्वर पर इस दोष का आरोप किया। इस प्रकार अपनी चिकित्सा के लिए ईश्वर को आधार बना कर मूर्ख होने के कारण ही वह पागल हो गया और वैद्य के रूप में समाज के लिए वह जो उपकार कर सकता था, उससे दूर हठ गया।"

इस प्रकार राजा के मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
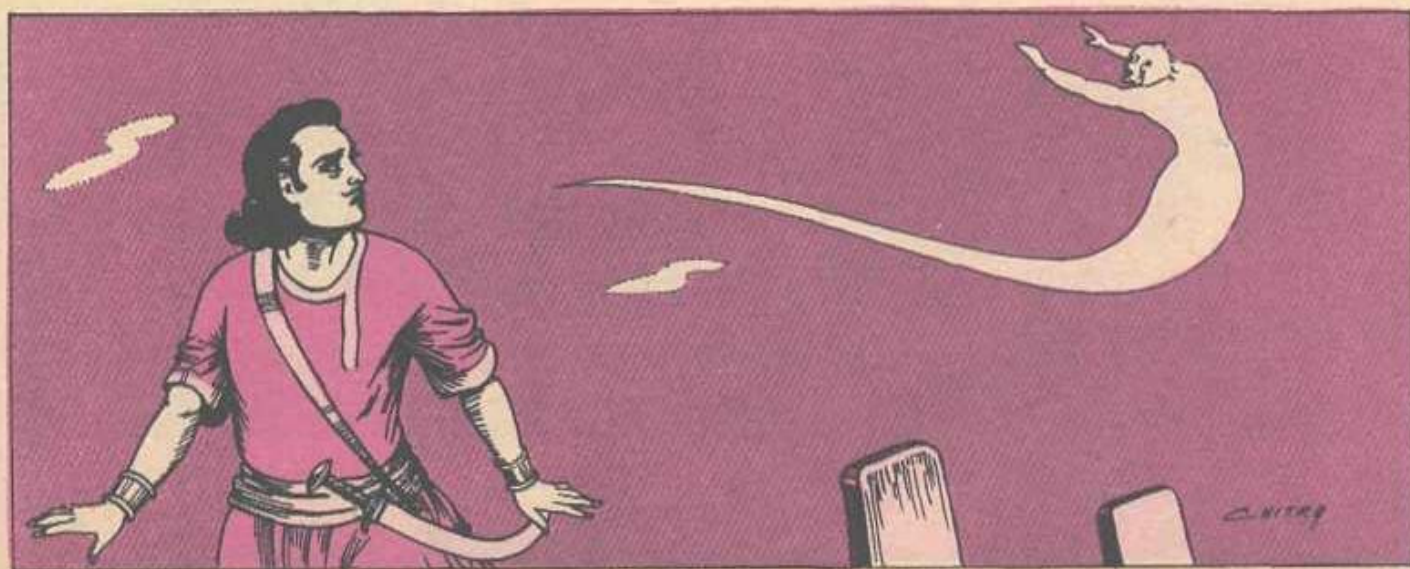
# स्वर्ग की प्राप्ति

एक बार तीनों लोकों में संचार करनेवाला नारद भूलोक के एक श्मशान से होकर जा रहा था, तब उसे एक कपाल दिखाई पड़ा। वह अपने पिता ब्रह्मा की लिखावट से परिचित था, उसने देखा कि उस कपाल पर 'स्वर्ग की प्राप्ति' लिखी हुई है। इस पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही।

नारद ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा तो उसे पता चला कि वह कपाल एक कंगाल का है। नारद ने सोचा कि यह कंगाल सारा जीवन गरीबी में बिता चुका है, इसने न एक पैसे का दान किया और न मंदिर-गोपुर बनाया। ऐसी हालत में इसे स्वर्गलोक की प्राप्ति कैसे होगी? ब्रह्मा ने कैसी भूल की है?

इस बात का पता लगाने के हेतु उस कपाल को लेकर नारद ब्रह्मलोक में पहुँचा और पूछा-"पिताजी! इस कंगाल ने एक भी पुण्यकार्य नहीं किया है, ऐसी हालत में इसके ललाट पर आपने स्वर्गलोक की प्राप्ति कैसे लिखी? यह तो झूठ है न?"

"बेटा, यह कैसे झूठ हो सकता है? इस कपाल को तुम्हीं खुद इस लोक में ले आये हो?" ब्रह्मा ने कहा।

# महा शिल्पी

हज़ारों साल पहले की बात है। एक गाँव में एक महाशिल्पी रहता था। उसने कई सुंदर महल, मंदिर और सभा भवन बनाये थे, इसलिए उसकी ख्याति दूर देशों तक फैल गयी थी।

उन्हीं दिनों में नागलोक के राजा के महल में भूकंप के कारण दरारें पड़ गयीं। उस महल का फिर से निर्माण कराने के ख़्याल से नागराज ने भूलोक से महाशिल्पी को बुलवाने का निश्चय कर लिया।

नागराज के द्वारा ख़बर पाकर शिल्पी बड़ा प्रसन्न हुआ। वह यह सोचकर नागलोक के लिए चल पड़ा कि उसे एक सुंदर महल बनाने का मौक़ा हाथ लगा है।

जल्द ही शिल्पी और नागराज के बीच अच्छी मैत्री स्थापित हुई। यद्यपि वह अतुल संपत्ति के बीच था और उसे सब सुविधाएँ प्राप्त थीं, तथापि वह अपने गरीब परिवार के बारे में, पत्नी और माता के बारे में सदा सोचा करता था।

एक दिन शिल्पी ने नागराज से पूछा— "राजन, आजकल मुझे अपने घर की चिंता लगी हुई है। क्या हमारे गाँव का हाल जानकर बता सकते हैं?"

"सच्ची बात मैं क्यों छिपाऊँ? तुम्हारे गाँव पर भयंकर अकाल पड़ा हुआ है।" नागराज ने उत्तर दिया।

"तब तो क्या आप वहाँ पानी नहीं बरसा सकते?" शिल्पी ने पूछा।

"ऐसा कभी नहीं हो सकता! इस प्रकार पानी बरसाना नियम के विरुद्ध है। इस बात का निर्णय पहले ही हो जाता है कि कब कहाँ अकाल पड़ना है! मैं इस संबंध में कुछ नहीं कर सकता। यह अकाल और निन्यानवें दिन तक रहेगा।" नागराज ने कहा।

गजाधर भट्ट

नागराज की बातें सुनने पर शिल्पी का दिल कांप उठा। उसे लगा कि उसके गाँव के लोग, उसकी माँ, पत्नी और रिश्तेदार खाने के लिए तड़प रहे हैं, वे लोग अन्न-जल के अभाव में घास-पात खाकर धीरे धीरे मरते जा रहे हैं।

"नागराज, मैं आपके पैरों पर पड़ता हूँ, आप मेरे गाँव में बरसात को भेज दीजिये। वे सब जल्दी मर जायेंगे। आप उन्हें बचाइये।" शिल्पी ने कहा।

"हे भोले शिल्पी, तुम उनकी चिंता क्यों करते हो? मेरे महल का निर्माण पूरा कर दो, तो तुम्हें बढ़िया पुरस्कार दूंगा। साथ ही तुम्हें दिल खोलकर असंख्य हीरे, सोना और चांदी दूंगा। तुम अपना शेष जीवन राजा की तरह बिता सकोगे।" नागराज ने समझाया।

"मेरे ग्रामवासियों को वर्षा चाहिए। आपके परिवार के लोग इस तरह पानी के अभाव में प्राण छोड़ते होंगे तो आप क्या इस तरह निश्चिंत रह सकते हैं?" शिल्पी ने पूछा।

"मुझे और न सताओ, अभी वर्षा नहीं हो सकती! बस!" ये शब्द कहते नागराज उठकर वहाँ से चला गया।

शिल्पी अपने गाँव जाने के लिए अपने औजार समेटने लगा।

यह खबर मिलने पर नागराज शिल्पी के पास आया और बोला-"तुम बिना वजह नाराज़ क्यों होते हो?"

"नागराज! मुझे तुरंत अपने गाँव जाकर वहाँ का हाल जान लेना है।" शिल्पी ने कहा।

"अरे, कौन है वहाँ? इस दुष्ट को बन्दी बनाओ।" नागराज ने अपने सिपाहियों को पुकारा, पलभर में कई सिपाहियों ने आकर शिल्पी को घेर लिया।

"अब बताओ, तुम मेरे महल की मरम्मत पूरा करोगे कि नहीं?" नागराज ने गरजकर पूछा।

"मेरे गाँव मे पानी बरसायेंगे कि नहीं?" शिल्पी ने दृढ़ स्वर में पूछा।

"मैंने पहले ही बताया है कि मैं पानी नहीं बरसाऊँगा।" नागराज ने कहा।

"तब तो मैं भी आपका काम पूरा नहीं करूँगा।" शिल्पी ने उत्तर दिया।

"इसे ले जाकर इसका सर..." नागराज ये शब्द कहते रुक गया। क्योंकि उसे यह बात याद आयी कि शिल्पी का सर कटवा दें तो उसके महल की मरम्मत का काम रुक जायगा, तुरंत उसने गहरी सांस लेकर कहा-"शिल्पी को छोड़ दो।"

इससे शिल्पी की हालत में कोई सुधार न हुई। क्योंकि उसे नागलोक से बाहर जाने नहीं दिया। उसका गाँव अकाल का शिकार हो गया है। ये ही बातें शिल्पी सोच रहा था, तभी उसकी दृष्टि एक खंभे पर पड़ी। शिल्पी के मन में कोई विचार आया, उसने आरे के साथ खम्भे को काटना शुरू किया। खम्भे के कटने के साथ सारा महल हिलने लगा। नागराज दौड़ते हुए वहाँ पर आ पहुँचा और चिल्ला उठा-"शिल्पी! खम्भे को काटना छोड़ दो! तुम्हारा पुण्य होगा।"

"तो क्या आप मेरे गाँव में पानी बरसायेंगे?" शिल्पी ने पूछा।

"ज़रूर बरसाऊँगा, शिल्पी! ज़रूर बरसाऊँगा।" नागराज बोल उठा।
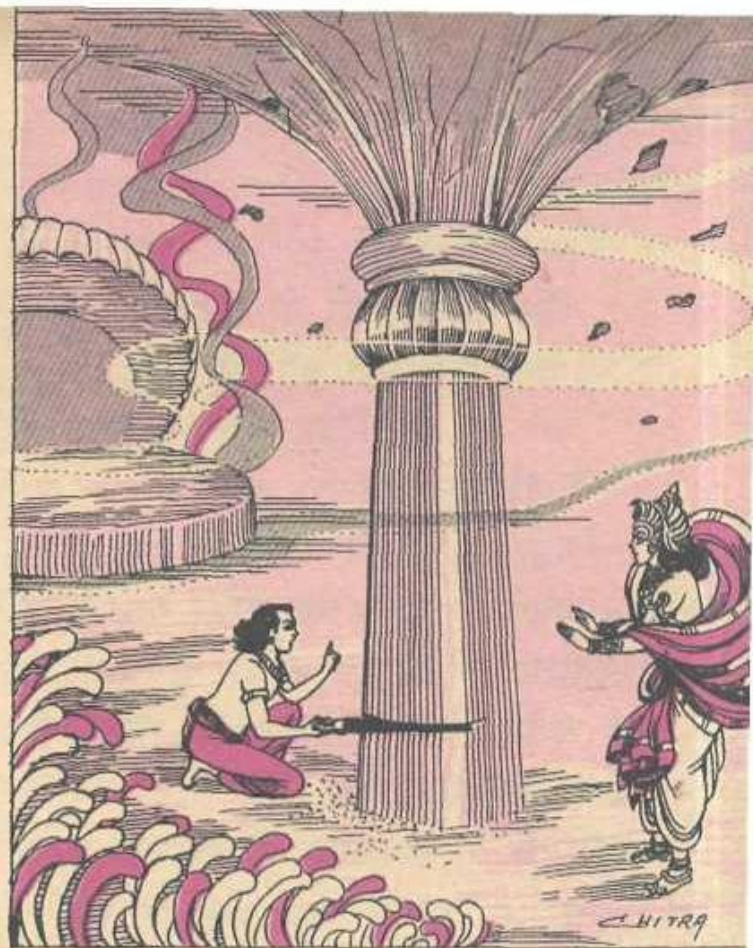
"मजाक में ही सही; ज़्यादा पानी बरसाकर मेरे गाँव में बाढ़ पैदा नहीं करना, जितनी वर्षा की ज़रूरत हो, उतनी ही बरसा दे!" शिल्पी ने कहा।

"जैसा तुम चाहोगे, वैसा ही करूँगा।" नागराज ने विनयपूर्ण शब्दों में कहा।

"आप मेरे गाँव में पानी बरसा दीजिये, तब देखिये, आपका महल ऐसा बनाऊँगा जिसे देख स्वयं इंद्र भी ईर्ष्या करेंगे।" शिल्पी ने कहा।

इसके बाद नागराज ने शिल्पी के शरीर पर अपनी शाल ओढ़ाकर कहा-"तुम अपने गाँव जाकर वहाँ पर पानी के बरसते खुद अपनी आँखों से देख आओ।"

शिल्पी भूलोक में आया। उसने स्वयं देखा कि उसके गाँव में पानी बरस रहा है और लोग खुशी के मारे चिल्ला रहे हैं। लेकिन गाँववालों ने उसे नहीं देखा, बल्कि सिर्फ़ एक महा सर्प को देखा।

"बाप रे बाप! यह कैसा महान सर्प है।" गाँववाले चिल्ला रहे थे।

"यही सर्प हमारे गाँव में वर्षा लाया है। इसके लिए हम एक मंदिर बनायेंगे।" गाँववालों ने कहा। जल्दी ही वहाँ पर एक मंदिर बनकर तैयार हो गया और अकाल भी जाता रहा।

शिल्पी ने नागलोक में लौटकर कहा– "नागराज, आपने मुझे सर्प के रूप में अपने गाँव में भेजा। मैंने अपने परिवार तथा अपने सभी ग्रामवासियों को देखा, लेकिन उनसे बात नहीं कर सका।"

"तुम तो बड़े हठी हो, इसलिए मैंने सावधानी से काम लिया। मैंने अपने वचन का पालन किया है, अब तुम अपना काम पूरा करो।" नागराज ने कहा।

शिल्पी ने नागराज के महल को बहुत ही सुंदर बनाया। उस महल के गृह-प्रवेश के समय इंद्र आया और सचमुच उसे ईर्ष्या हुई। अपने कार्य के समाप्त होते ही नागराज ने शिल्पी को असंख्य उपहारों के साथ वापस भेज दिया।

गाँववालों ने शिल्पी को देख कहा– "इतने दिन तक तुम कहाँ रहे? जानते हो, इस गाँव में कैसा भयंकर अंकाल पड़ा था। किसी देवता सर्प ने आकर यहाँ पानी बरसाया। उसके लिए हमने एक मंदिर भी बनाया है, लेकिन वह सर्प कुछ दिन बाद कहीं चला गया है।"

"मैं ही वह सर्प हूँ!" शिल्पी ने उत्तर दिया। गाँव के अनेक लोगों ने शिल्पी की बातों पर विश्वास नहीं किया। उसने गाँववालों को अपने सारे अनुभव सुनाये। इस पर गाँववालों ने उसकी बातों पर न केवल विश्वास किया, बल्कि उसके इस उपकार पर फूले न समाये। उस दिन से उस गाँव का नाम सर्पपुर पड़ा।

गौड़देश का राजा देववर्मा बड़ा मूर्ख था। इसलिए लोग उसे पागल राजा कहकर पुकारते थे। लेकिन देववर्मा का मंत्री बड़ा मेधावी था। राजा जब-तब जो गलत निर्णय कर बैठता, उन्हें बड़ी चालाकी से मंत्री बदल देता और देश की हानि होने से रक्षा करता।

एक बार राजा देववर्मा के दर्शन करने एक कपट साधू आया। उसने कहा– "महाराज, मुझे लगता है कि आप किसी अतृप्त कामना से परेशान हैं। बताइये, आपकी वह इच्छा क्या है? यदि संभव हुआ तो मैं अपने तपोबल से आपकी इच्छा की पूर्ति करने का उपाय बताऊँगा।"
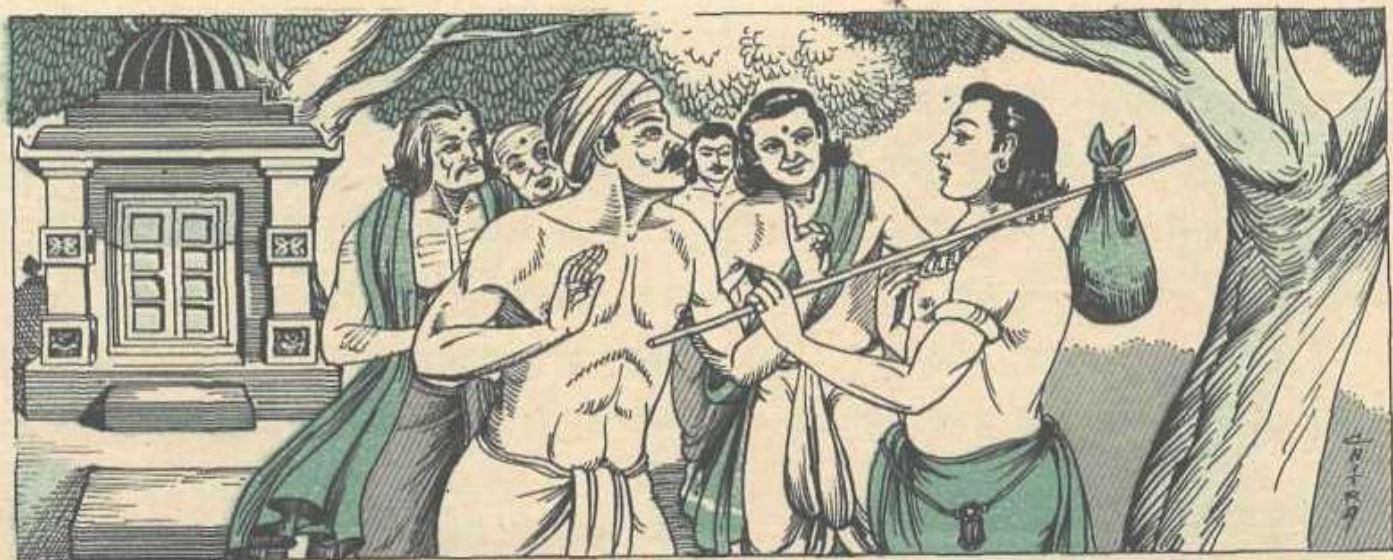
देववर्मा को बड़ा आश्चर्य उआ। उसने कहा–"साधू महाराज, आपने मेरे मन की ताड़ ली। मेरे मन को यह चिंता सदा खुरेदती रहती है कि मैंने भी चक्रवर्ती के रूप में जन्म लेकर यश प्राप्त क्यों नहीं किया?"

कपट साधु ने थोड़ी देर तक सोचने का अभिनय करके कहा–"यह विचार आपके मन में यूँ ही पैदा नहीं होगा! इसका कारण कोई अवश्य होगा, इसलिए आप अपनी जन्मपत्री दिलाइये, देख तो लूँ!"

राजा ने अपने दरबारी ज्योतिषियों को बुला कर अपनी जन्मपत्री को साधू महाराज को दिखाने का आदेश दिया।

साधू ने जन्मपत्री देखकर कहा– "महाराज, क्या बताऊँ? बीस साल पूर्व आपकी राशि में चक्रवर्ती का योग था। उस वक़्त यदि आपने ग्रहों की शांति करायी होती, आपकी कामना सफल हुई होती। अब भी कोई चिंता की बात नहीं, बीस साल और गुज़र जायेंगे तो आप अवश्य ही चक्रवर्ती बनेंगे।"

इंदुमती जैन

पागल राजा साधू की बातों पर बड़ा प्रसन्न हुआ, दिल खोल कर उसे दान-दक्षिणा देकर भेज दिया। उस दिन से राजा के मन में चक्रवर्ती बनने की लालसा बढ़ती गयी। बीस साल तक प्रतीक्षा करने की सब्रता न रही। उसके मन में अचानक एक बेतुका विचार आया। उसने अपने दरबारी ज्योतिषियों को बुला कर कहा–"कल से पंचांग को बीस साल आगे बढ़ा दीजिये। तिथि, वार और नक्षत्रों को आगे करके कल तक एक नया पंचांग तैयार कर दीजिये।"

ज्योतिषी सब आश्चर्य चकित हुए और मंत्री के पास जाकर सबने अपनी विपत्ति बतायी। मंत्री ने राजा की सेवा में पहुँच कर कहा–"महाराज, आपने पंचांग को बीस साल आगे बढ़ाने का आदेश दिया है। मगर इससे उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों पर आपने विचार नहीं किया।"

"वे कठिनाइयाँ कैसी?" राजा ने पूछा।

"इस वक्त आपकी उम्र चालीस साल की है। पंचांग के बीस साल आगे बढ़ाने पर आप साठ साल के हो जायेंगे। तब युवराज पच्चीस साल का हो जायगा। इसलिए उसे गद्दी पर बिठा कर आपको वानप्रस्थ में जाना पड़ेगा।" मंत्री ने समझाया।

राजा ने चकित हो कर कहा–"अरे, यह तो बड़ी झंझट है! लेकिन एक काम करेंगे! पंचांग को बीस साल पीछे हटवा देंगे। ग्रहों की शांति करके मैं चक्रवर्ती बन जाऊँगा।"

"इस में तो और कठिनाइयाँ हैं। बीस साल पहले आपको गद्दी पर बैठने का योग न था। बड़े राजा अधेढ़ उम्र में थे। तब तो आपको गद्दी से हाथ धोना पड़ेगा।" मंत्री ने कहा।

राजा ने चौंक कर कहा–"नहीं, नहीं! ऐसा नहीं होना चाहिये।" इसके बाद ज्योतिषियों को बुलाकर उन्हें कड़ा आदेश दिया–"तुममें से यदि किसी ने पंचांग को आगे या पीछे कर दिया तो तुम्हारे सर कटवाकर दुर्ग के द्वार पर लटकवा दूंगा!"

# पति की खोज में

पुराने जमाने की बात है! उज्जयिनी नगर में सागरदत्त नामक एक व्यापारी रहा करता था। उसके पास अपार संपति थी। एक बार नौका व्यापार करते उसने बीच समुद्र में एक दूसरी व्यापारी नौका को देखा। उस नौका का मालिक राजगृह नामक नगर का व्यापारी बुद्धवर्मा था।

सागरदत्त और बुद्धवर्मा के बीच गहरी मैत्री पैदा हुई। बातों के सिलसिले में दोनों ने यह निर्णय किया कि उनमें यदि एक के घर लड़की और दूसरे के घर लड़का पैदा हो जाय तो उनका विवाह करेंगे।

सागरदत्त व्यापार से छुट्टी पाकर घर लौटा तो मल्लिका-पुष्पों की माला पहनायी गयी लड़की को लाकर उसके हाथों में दिया गया।

"यह मल्लिका कौन है?" सागरदत्त ने अपनी पत्नी से पूछा।

सागरदत्त की पत्नी ने लजाते हुये जवाब दिया-"आप ही की पुत्री है!"

लड़की का नाम मल्लिका ही रखा गया।

सागरदत्त ने बुद्धवर्मा के साथ जो निर्णय किया था, उसे अपनी पत्नी को सुनाया और यह समाचार राजगृह के निवासी बुद्धवर्मा के पास भेजा गया।

बुद्धवर्मा जब व्यापार के लिए घर से निकल पड़ा था, तब उसकी पत्नी पूर्ण गर्भवती थी। इसलिए उसने घर लौटते ही अपनी पत्नी से पूछा-"हमारे यहाँ कौन-सा शिशु पैदा हुआ है?" बुद्धवर्मा की पत्नी ने शिशु को लाकर उसके सामने रखा। वह शिशु क्या था, हड्डियों का ढाँचा था, उसके सिर्फ़ एक आंख थी, और शिशु भी कुबड़ा था।

"तुमने इस ओष्ट्र का जन्म क्यों दिया?" बुद्धवर्मा अपनी पत्नी पर खीझ

कुमारी मृदुला

उठा। पिता ने उस शिशु को ऊँट बताया, इसलिए उसका नाम ओष्ट्र पड़ गया।

इतने में उन्हें समाचार मिला कि सागरदत्त के यहाँ पुत्री पैदा हो गयी है। यह खबर लानेवाले व्यक्ति का उचित स्वागत करके बुद्धवर्मा ने अपनी पत्नी से कहा–"देखती हो न, क्या से क्या हो गया है? अब हम सागरदत्त के यहाँ क्या समाचार भेजें?"

"आपने मेरी सलाह मांगी, इसलिए सुनिये। व्यापारी को चाहिए कि उसे अपने स्वार्थ के वास्ते सत्य और झूठ का समन्वय करे। यह समाचार दीजिये कि हमारे यहाँ पुत्र पैदा हो गया है। इसमें तो कोई झूठ नहीं है। यह भी कहला भेजिये कि उसकी आकृति वर्णन के बाहर है। उसके स्वरूप और स्वभावों को देखकर ही जाना जा सकता है। लेकिन हमें किसी भी हालत में सागरदत्त के संबन्ध को त्यागना नहीं चाहिए। घर आनेवाली लक्ष्मी का तिरस्कार नहीं करना है।" बुद्धवर्मा की पत्नी ने समझाया।

इस पर बुद्धवर्मा ने सागरदत्त के दूत से वे बातें बतायीं जो उसकी पत्नी ने बताने को कहा था। दूत का राह-खर्च देकर उसे विदा कर दिया।

इसके बाद आठ वर्ष तक राजगृह तथा उज्जयिनी के बीच दूत-कार्य चलता रहा। किंतु अचानक एक दिन सागरदत्त के दूत ने राजगृह आकर बुद्धवर्मा से कहा–"महाशय, इस बार मेरे मालिक ने यह आदेश दिया है कि लड़के को देख उसके रूप और गुणों का परिचय पाकर ही मैं राजगृह लौटूँ।"

बुद्धवर्मा ने बिना संकोच के झूठ बोल दिया–"मेरा पुत्र ताम्रलिप्ति में अपने मामा के यहाँ शिक्षा पा रहा है।"

इस प्रकार चार साल बहानों पर ही बीत गये। एक दिन सागरदत्त के चार-पाँच बुद्धिमान अनुचरों ने बुद्धवर्मा के पास आकर कहा–"महाशय, आपके मित्र सागरदत्त और उनकी पत्नी ने आप से यह

निवेदन करने को कहा है कि यों तो तेरह-चौदह साल बीत गये, फिर भी हमारे होनेवाले दामाद कैसे हैं, हम जान नहीं पाये। आप जानते ही हैं कि माल छिपाकर मोल-भाव करना उचित नहीं है। यह बात हमें असंगत मालूम होती है कि आपका पुत्र आज तक ताम्रलिप्ति में अध्ययन कर रहा है। वेदाध्ययन के लिए भी इतने साल नहीं लगते। इसलिए आप यह मज़ाक़ छोड़कर आपके घर या ताम्रलिप्ति में ही सही, अपने पुत्र को हमें दिखा दीजिये।"

"भाइयो, तुम लोग विश्राम करो।" दूतों से ये शब्द कहकर बुद्धवर्मा अपनी पत्नी के पास गया और बोला–"दूत हमारे पुत्र को देखने का हठ कर रहे हैं। उन्हें हम अपने पुत्र के ऊँचे दांत, अंधी आँख और कुबड़ा कैसे दिखावे? अब तुम्हीं कोई उपाय बता दो।"

"मैंने कभी का उपाय सोच रखा है।" इन शब्दों के साथ बुद्धवर्मा की पत्नी ने अपने विचार बताये।

बुद्धवर्मा के दानों पर पलनेवाला एक ब्राह्मण था। बुद्धवर्मा ने एकांत में उसके घर जाकर अपनी समस्या बतायी और कहा–"विप्रवर, इस समय तुम्हारी सहायता के बिना मेरी इज्जत धूल में मिल जायगी। तुम्हारा पुत्र यज्ञगुप्त सुंदर और समस्त शास्त्रों का ज्ञाता भी है। मेरे पुत्र के बदले उसे सागरदत्त की पुत्री के साथ विवाह करना होगा और उस कन्या के कन्यात्व की रक्षा करते हुए उसे मेरे घर पहुँचा देना होगा। यदि ऐसा करोगे तो मुझे सागरदत्त के द्वारा जो दहेज़ प्राप्त होगा, उसमें से आधा अंश मैं तुम्हें दूंगा।"

"महाशय, तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करना मेरा कर्तव्य है। चिंता न करो।" ये शब्द कहकर अपने पुत्र को बुलाया और उसे सारी हालत समझा दी।

"आप मेरे पिता ही नहीं बल्कि गुरु भी हैं। इसलिए आपके आदेश पर गुण-

दोषों का विवेचन मुझे नहीं करना है।" इन शब्दों के साथ यज्ञगुप्त ने स्वीकृति दी।

एक दो दिन बीतने पर बुद्धवर्मा ने सागरदत्त के दूतों से कहा–"मेरा पुत्र ताम्रलिप्ति से लौट आया है।" इसके बाद उसने यज्ञगुप्त को सागरदत्त के दूतों को दिखाया। दूतों ने सोचा कि मल्लिका बड़ी भाग्यशालिनी है। उन्होंने बुद्धवर्मा से कहा कि कोई अच्छा मुहूर्त देख विवाह के लिए चले आयें। तब वे बड़ी प्रसन्नता के साथ वहाँ से चले गये।

दो-चार दिन बाद बुद्धवर्मा ने यज्ञगुप्त को दूल्हा बनाकर अपने पुत्र को ब्राह्मण का वेष धरवाया और सपरिवार उज्जयिनी के लिए चल पड़ा।

दूसरे दिन सुबह विवाह संपन्न हुआ। वर और वधू जब अग्निकुण्ड की प्रदक्षिणा कर चुके तब वर इस तरह गिर गया, मानों बेहोश हो गया हो। किसी अशुभ की आशंका करके कन्यापक्ष के लोग घबरा गये, बड़ी देर तक उपचार करने पर यज्ञगुप्त ने आँखें खोलकर धीरे से कहा–"मेरे पेट में दर्द पैदा हो गया था।"

वैद्यों ने एक कमरे में ले जाकर उसकी चिकित्सा की। वधू बिना लजाये वर के पास बैठे वैद्यों के कहे अनुसार दवाएँ पिलाती रही। मगर इन सारी दवाओं के बावजूद भी उसकी उदर-व्याधि जाती नहीं रही।

कुबड़ा भी वर के साथ रहते वधू से मज़ाक भी करने लगा। इसे देख मल्लिका
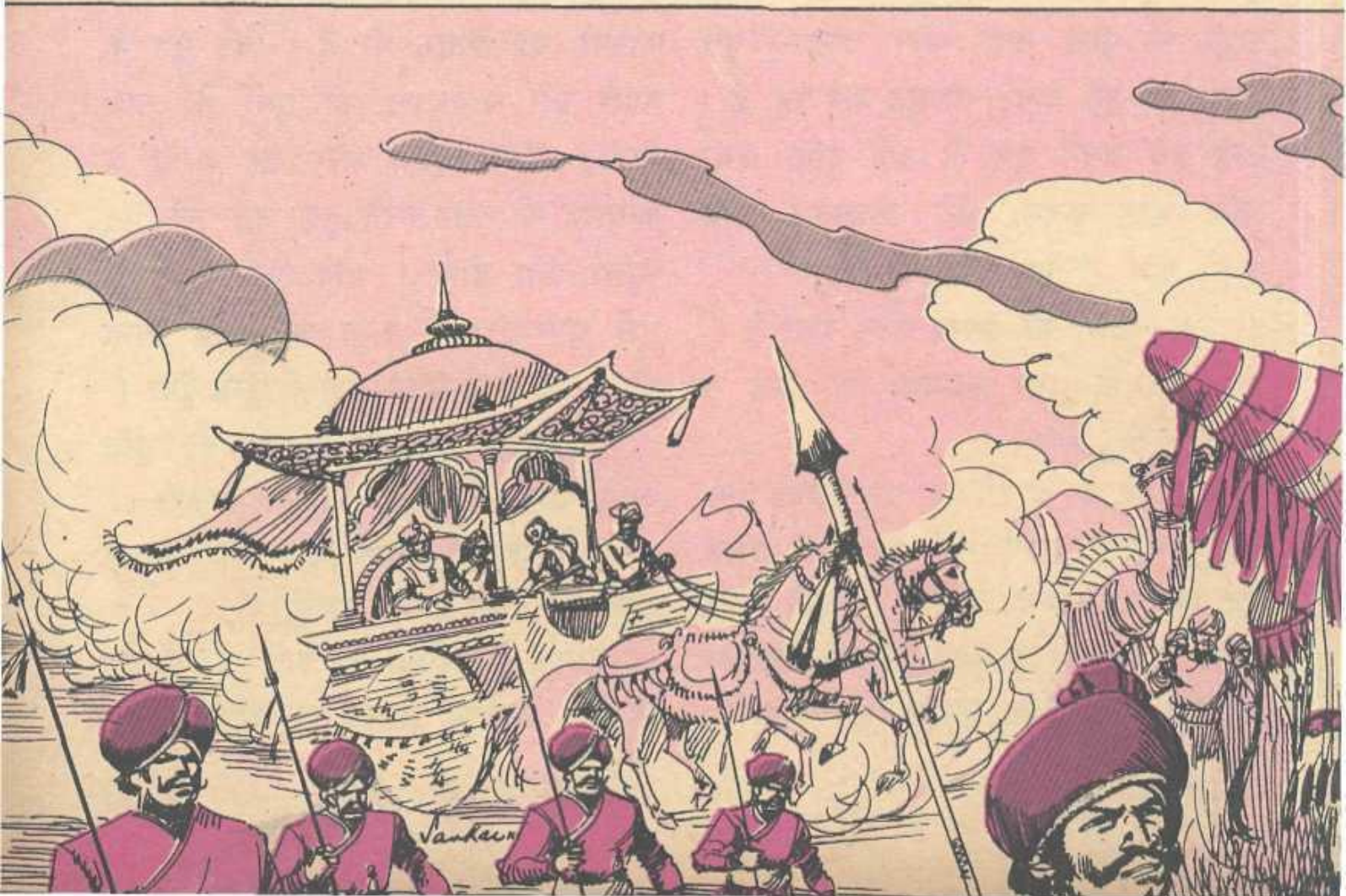
खीझ उठी। इस पर यज्ञगुप्त ने कहा–"मजाक करनेवाले पर नाराज़ क्यों होती हो? उसे बकने दो।"

मगर यज्ञगुप्त के मन में यह डर बराबर बना रहा कि कहीं यह कुबड़ा उसका रहस्य खोल न बैठे। यह सोचकर उसने सागरदत्त से कहा–"मुझे अपने माता-पिता को देखने की बड़ी इच्छा हो रही है।"

वैद्य ने वर की इच्छा जानकर सागरदत्त से कहा–"हमने बदहजमी के लिए आवश्यक सारी दवाएँ दे दी हैं, पर कोई गुण दिखाई नहीं देता। अगर ये अपने परिवार के लोगों से मिले, तो संभवतः यह बीमारी दूर हो सकती है। इसलिए तुरंत इसे भेज देना उचित होगा।"

सागरदत्त ने अपनी पुत्री और दामाद की यात्रा की सारी तैयारियाँ करवा दीं। दहेज की सामग्री को अनेक ऊँटों पर लदवा दिया। दास और दासी तथा अंगरक्षकों के साथ उन्हें राजगृह के लिए रवाना कर दिया। सागरदत्त के नौकर उनसे पहले ही रवाना होकर चले गये। उन लोगों ने हर मंजिल पर ठहरने, खाने-पीने आदि का अच्छा प्रबंध किया और वर के स्वास्थ्य का समाचार बराबर पहुँचाते रहें।

एक एक मंजिल को पार करते वर की बीमारी भी सुधरती गयी। राजगृह तक पहुँचते-पहुँचते वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। यह समाचार मिलते ही सागरदत्त
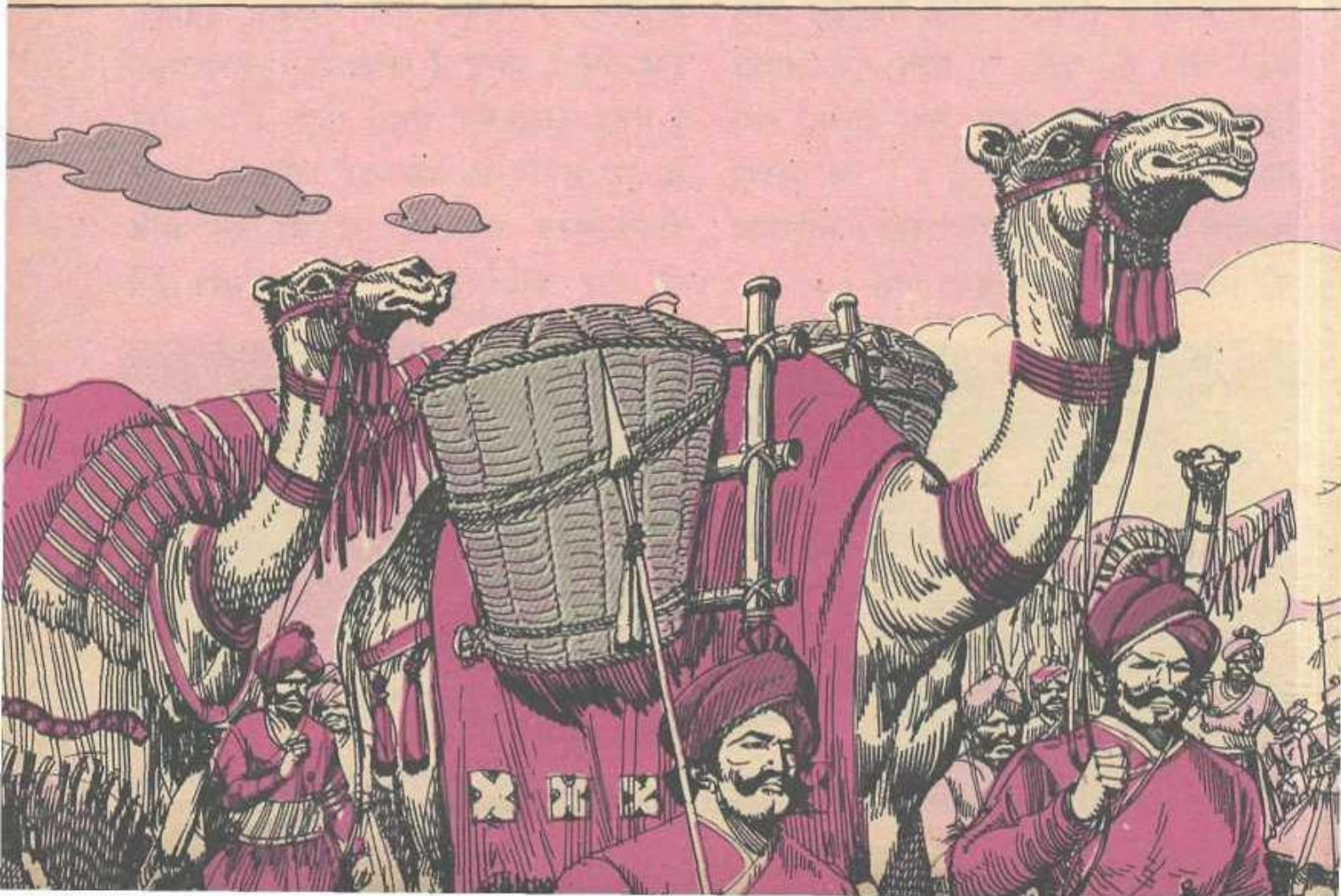
आनंद से भर उठा और उसने गरीबों में अपार दान बाँट दिये।

बुद्धवर्मा इधर अपनी बहू को देख बड़ा प्रसन्न हुआ। उस रात को वर और वधू को गर्भधान-गृह में भेजा गया। उस कमरे में मल्लिका के साथ उसकी सखियाँ, कुबड़ा और यज्ञगुप्त भी रहें।

मल्लिका ने अपने मन में सोचा–"यह कुबड़ा इस कमरे में क्यों है?"

कुबड़े ने सोचा कि यह ब्राह्मण कुमार अब भी मेरा पीछा कर रहा है। वहाँ की हालत जानकर यज्ञगुप्त वहाँ से चले जाने को उठ खड़ा हुआ। इसे देख मल्लिका चिल्ला उठी–"उफ़! आप कहाँ जा रहे हैं? मेरी हालत क्या होगी?"

"भाग्य ने तुम्हारे ललाट पर जैसे पति को लिखा है, उसी के साथ तुम अपनी ज़िंदगी बिताओ। इसमें मेरा हिस्सा पाप को बाँटना मात्र रहा है।" इन शब्दों के साथ यज्ञगुप्त बाहर चला गया। मल्लिका की सखियाँ भी बाहर चली गयीं।

कुबड़े ने मल्लिका का हाथ पकड़कर उसे रोकना चाहा। मगर मल्लिका चिल्लाकर बाहर दौड़ पड़ी। वह सभी कमरों को पार करते महल के बाहर आ पहुँची। सभी कमरों में लोग शराब के नशे में पड़े हुए थे। कुछ दासियाँ खुशी के मारे नाच रही थीं।

मल्लिका गली में किसी को देख "लो, वही-वही" चिल्लाते उस ओर दौड़ पड़ी। इसके बाद वह किधर जा रही थी, स्वयं उसे मालूम न था। एक जगह सड़क के किनारे शराब के नशे में सोनेवाला एक कापालिक उसे दिखाई पड़ा।

मल्लिका ने तुरंत अपने कर्तव्य का निश्चय कर लिया। उसने अपने सारे आभूषण उतारकर एक पोटली बनायी, उन्हें अपनी कमर में खोंस दी। कापालिक के वस्त्र उतारकर उसने पहन लिये और वह भी शराब के नशे का अभिनय करते लोटते-गिरते, नगर को पारकर एक गाँव की ओर चल पड़ी। (और है)

# अक्ल बड़ी कि भैंस

वीरसिंह और ज्ञानप्रकाश दो मित्र थे।

ज्ञानप्रकाश दुबला-पतला लड़का था, और बड़ी मेहनत से पढ़ता था, वीरसिंह ज्यादा-लंबा चौड़ा था और हमेशा लड़ाई-झगड़ों में पड़ा रहता था। वह इतना पेटू था कि ज्ञानप्रकाश के हिस्से की रोटी भी खा लेता था। ये दोनों गरीब घर के लड़के थे और मानते थे कि उन्हें भविष्य में अपना ही भरोसा रखना है।

ज्ञानप्रकाश हमेशा वीरसिंह को समझाता, ठीक से कुछ पढ़-लिख लो तो काम आयेगा—वह उसकी एक न सुनता। एक दिन दोनों में बहस हो गयी। ज्ञान प्रकाश से वीरसिंह ने पूछा कि पढ़ने-लिखने से क्या लाभ होता है ?

ज्ञान प्रकाश ने कहा—बुद्धि तीव्र होती है, तो वीरसिंह बोला—बुद्धि के तीव्र होने से कुछ नहीं होता, आदमी एक बार का खाना भी जुटा नहीं पाता, यदि शरीर में बल है तो वह डंडे के जोर से रोटी पा ही लेगा। ज्ञान प्रकाश समझ गया कि यह ऐसे न मानेगा। उसने एक तरक़ीब सोची और वीरसिंह से शर्त लगाई कि पास के गाँव को चलते हैं, तुम डंडे के ज़ोर से रोटी खाना और मैं बुद्धि के ज़ोर से पेट भर लूँगा।

दूसरे दिन सुबह वे दोनों पास के गाँव में पहुँचे। वीरसिंह के हाथ में लंबा सा डंडा था, ज्ञान प्रकाश के हाथ में एक खाली पतीली थी और जेब में एक सफ़ेद पत्थर।

वीरसिंह तेज़ी से चलता हुआ पहिले उस गाँव में पहुँच गया। सुबह का समय था। एक घर में एक किसान रोटी खा रहा था—वीरसिंह सीधे उसके पास पहुँचा और बोला—"मुझे भी रोटी दो।"

किसान भौंचक्का सा उसकी ओर देखने लगा। रोटी बनाती उसकी बीबी के हाथ

श्रीमती क्रांति त्रिवेदी
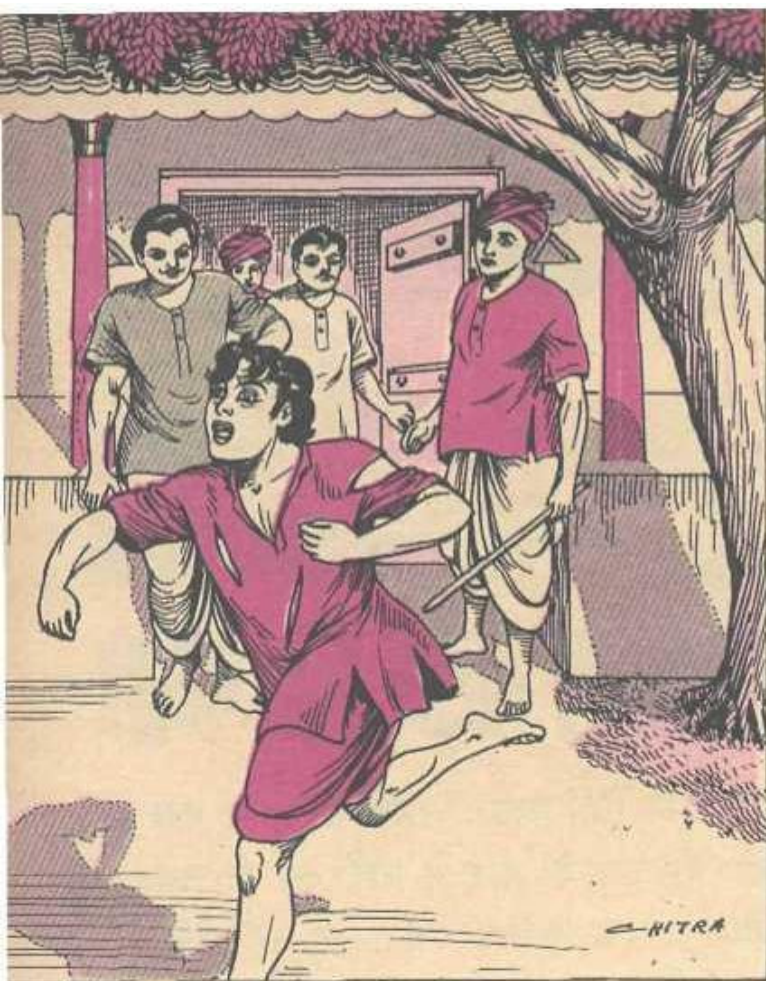
भी थम गये। किसान को चुप देख वीरसिंह और ज़ोर से बोला–"लाओ, मेरी भी थाली लाओ।"

अब तक किसान का आश्चर्य कम हो गया था और वह बोल उठा–"तुम्हें मैं रोटी क्यों खिलाऊँ, क्या तुम मेरे कोई रिश्तेदार हो?" "खाना देते हो या नहीं? मेरा यह डंडा देखा है?" ये दोनों इस तरह बात कर ही रहे थे कि किसान की बीबी उठी और पीछे के दरवाज़े से जाकर गाँव के कुछ लठ्ठबाजों को बुला लाई।

वीरसिंह किसान को धमका ही रहा था कि रोटी देते हो कि डंडा मारूँ कि उसकी पीठ पर देखते देखते आठ-दस डंडे पड़ गये, वीरसिंह कराहता हुआ भागा। गाँव के छोर पर ज्ञानप्रकाश मिला। उसने वीरसिंह से कहा–"घंटे भर बाद तुम उस बड़े से पेड़ के नीचे आना, मैं ख़ुद भी खाऊँगा और तुम्हें भी खिलाऊँगा।"

अब ज्ञान प्रकाश उसी किसान के यहाँ पहुँचा। वीरसिंह को भगाने के बाद सब आपस में उसी के बारे में बात कर रहे थे कि ज्ञान प्रकाश ने जाकर खाना माँगा।

किसान ने गुस्से में भरकर कहा–"खाना-वाना यहाँ कुछ नहीं है, यदि चाहो तो डंडा दे सकते हैं।" ज्ञान प्रकाश हाथ जोड़कर बोला–"न बाबा! मैं भूखा ज़रूर हूँ, डंडा नहीं खा सकता।" उसकी यह बात सुनकर सुननेवालों को हँसी आ गयी। ज्ञानप्रकाश फिर बोला–"मैंने तो सुना था, इस गाँव के लोग बड़े सम्पन्न हैं, ख़ैर, कोई बात नहीं, अगर आप मुझे पानी केवल देने की कृपा करें तो मैं आपको एक बहुत ही स्वादिष्ट चीज़ बनाकर खिला सकता हूँ।" गाँववाले उत्सुक हो उठे। ज्ञानप्रकाश ने अपने बर्तन में पानी लिया और बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहाँ उसने पत्थर जोड़कर चूल्हा बनाया, फिर इधर उधर से लकड़ियाँ बीनकर आग जलायी, आग पर पानी का बर्तन रखकर उसने अपनी जेब से पत्थर निकालकर इस तरह से

उसमें डाला कि सब ने अच्छी तरह देख लिया। बर्तन को ढक दिया, थोड़ी देर बाद उसने चम्मच से जरा सा पानी निकाल चखा और बोला–उफ! कितना स्वादिष्ट है, बस इसमें जरा से आलू पड़ जायें तो मजा आ जाये।

ज्ञानप्रकाश के आस पास देखनेवालों की भीड़ थी। भीड़ में से एक दो लोग गये और दो तीन आलू ले आये। आलू डालने के कुछ देर बाद उसने फिर पानी चखा और बोला–"मजा आ गया! बस जरा सी दाल और थोड़ा चावल चाहिए और जितने क़िस्म की हो सके, सब्जी।" कई लोग दौड़े और थोड़ी थोड़ी चीज़ें लाकर उस पानी में डाल दीं।

अब चख कर ज्ञानप्रकाश बोला–"ओफ़! ओह! आप सब ने तो इतनी चीजें डाल कर नमक ही कम कर दिया। जाईये, ज़रा सा नमक ले आइये।"

अब तक पानी में डाली गयीं सब चीज़ें पक गयी थीं। सब उत्सुक दृष्टि लगाये खड़े थे। ज्ञानप्रकाश ने पेड़ के पत्ते तोड़ कर दो पत्तल बनाई और गाँववालो से बोला–"भाईयों, आपने एक और भूखे आदमी को खाना देने से इन्कार कर दिया था, पहिले मैं उसे भोजन कराऊँगा, फिर आप सब को यह अद्‌भुत व्यंजन चखने को दिया जायेगा।"

बर्तन में दाल, चावल, सब्जी आदि पड़ने के कारण एक तरह की तहरी बन गयी थी। पत्तल में परोस कर दोनों मित्रो ने भोजन किया। उसके बाद ज्ञानप्रकाश व वीरसिंह जाने को तैयार हो गये। ज्ञानप्रकाश ने गाँववालो से कहा–"अब आप अपने बर्तन में यह व्यंजन ले लीजिये, हमें जल्दी अपने गाँव पहुँचना है, इसलिए जा रहे हैं।"

इस तरह ज्ञानप्रकाश ने अपनी बुद्धि के बल पर न केवल पेट भर भोजन ही कर लिया बल्कि गाँव वालों और वीरसिंह को सीख भी दी।

# तानसेन का गुरु

बादशाह अकबर तानसेन के संगीत पर जब मुग्ध हुआ, तब उसने तानसेन के गुरु के गीत भी सुनना चाहा। इस पर तानसेन बादशाह अकबर को उस गुफा के पास ले गया जहाँ तानसेन का गुरु तपस्या कर रहा था।

तानसेन का गुरु तप की समाधि में लीन था। बड़ी देर तक उसे गुफा से बाहर न आते देख तानसेन अपस्वर में एक गीत गाने लगा।

तुरंत तानसेन का गुरु बाहर आया और बोला–"अरे दुष्ट, तुम मेरे शिष्य होकर भी ऐसे भद्दे गीत गाते हो?" इन शब्दों के साथ गुरु ने स्वयं गाना प्रारंभ किया। उसका गीत सुनने के लिए जंगल के सभी जानवर वहाँ आ पहुँचे। अकबर की प्रसन्नता की सीमा न रही।

राजमहल में लौटने पर अकबर ने तानसेन से पूछा–"तुम्हारे गुरु के गाने पर जानवर उस संगीत को सुनने आ पहुँचे, तुम्हारे गाने पर वे क्यों नहीं आये?"

इस पर बीरबल ने जवाब दिया–"तानसेन का गुरु अल्लाह के दरबारी गायक है, तानसेन तो आपके ही दरबार के गायक जो हैं!"

# गप्पों की सज़ा

एक गाँव में माणिक्य वर्मा नामक एक गृहस्थ था। उसके यहाँ बाप-दादों की कमाई हुई इतनी सारी संपत्ति थी कि कोई काम-वाम किये बिना वह आराम से जी सकता था। इसलिए वह गाँववालों के सामने अपनी शक्ति और सामर्थ्य के बारे में गप्प हाँकते अपने दिन बिता देता था। वह कभी कहता कि दस रुपये की क़ीमतवाली चीज़ को उसने पाँच ही रुपयों में ख़रीद लिया है, इस तरह वह अपनी सारी अक़्ल गप्पों की कल्पना करने में लगा देता।

एक दिन माणिक्य वर्मा भागवत पुराण सुनने गया। वहाँ पर एक व्यक्ति के साथ उसका परिचय हुआ। पुराण के समाप्त होने पर दोनों गप्प लड़ाते थोड़ी दूर तक साथ चले। रास्ते में नये व्यक्ति ने माणिक्य वर्मा से यों कहा:

"आज राजा के महल में एक विचित्र घटना घटी है। वह यह कि राजा जब दस-बारह लोगों के बीच बैठे बात कर रहा था तब अंत:पुर से उसे ख़बर मिली कि रानी साहिबा का पेट उफर आया है। राजा से बात करनेवालों में पड़ोसी गाँव का एक वैद्य भी था। तब राजा ने उस वैद्य को आदेश दिया कि वह अंत:पुर में जाकर रानी का इलाज करे। वैद्य ने अंत:पुर में जाकर सोंठ के रस को उबालकर उसमें गुड़ मिला करके रानी को पिलाया। तुरंत रानी स्वस्थ हो गयी। उस वक़्त रानी ने क्या किया, जानते हो? अपने पास किसी को न देख उसने चुप के से अपने कंठ से हीरों की माला निकालकर वैद्य को इनाम में दिया और कहा कि इसे तुम सावधानी से छिपा लो और यह बात किसी से मत कहो। सुनते

प्रमीला अवस्थी

हो कि सोंठ का रस पिलाने से रत्नहार इनाम में मिला! इसीलिए अगर सेवा करनी ही है तो बड़ों की करनी चाहिये! वह वैद्य मेरा मित्र था, इसलिए उसने मुझे यह रहस्य बताया।"

इस प्रकार वे दोनों बात करते एक कुएँ के पास पहुँचे। यह वृत्तांत बतानेवाला प्यास का बहाना करके कुएँ में उतर गया। कुएँ में सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। कुएँ के बाहर आने पर वह थोड़ी दूर तक माणिक्य वर्मा के साथ चलता रहा, तब दोनों अपने-अपने रास्ते चले गये।

माणिक्य वर्मा जब घर पहूँचा, तब बड़ी रात हो गयी थी।

"अब तक तुम कहाँ थे?" माणिक्य वर्मा की पत्नी ने पूछा।

गप्पे हाँकने के आदी हुए माणिक्य वर्मा ने अपनी पत्नी से कहा—"ओह, क्या बताऊँ? आज कैसी विचित्र घटना हो गयी है! एक बार राजा के दर्शन करने चला, उस वक़्त बताया गया कि रानी को पेट में भयंकर दर्द हो गया है। मैंने राजा से कहा कि मैं रानी का इलाज कर सकता हूँ। इस पर मुझे अंत:पुर के भीतर ले गये! ओह! अंत:पुर का वैभव क्या बताऊँ! वह तो देखते ही बनता है! रानी पेट के दर्द से परेशान थी। मैंने तुरंत चूल्हा जला कर सोंठ के रस को गुड़ के साथ मिला कर उबाला और रानी को दिया। उस रस के रानी के पेट में जाने भर की देरी थी, बस, पेट का दर्द गायब हो गया! रानी बहुत प्रसन्न हुई। उसने तुरंत अपने कंठ का रत्नहार मेरे हाथ में दिया। इसीलिए मेरे घर लौटने में देरी हो गयी।"

"कहाँ है वह रत्नहार?" माणिक्य वर्मा की पत्नी ने उत्सुकता में आकर पूछा।

"ओह, क्या बताऊँ? वह रत्नहार एकदम चमक रहा था। ऐसे क़ीमती रत्नहार को रात के समय अपने घर में छिपाना ठीक न समझ कर मैं उसे एक

कुएँ के खोखले में छिपा कर आया हूँ। तड़के उठ कर हम उसे ले आयेंगे।" माणिक्य वर्मा ने समझाया।

माणिक्य वर्मा की पत्नी को वह रात नींद न आयी। उस रत्नहार के देखने तक उसे भूख-प्यास का भी अनुभव न हुआ। सवेरे तक वह जागती ही रही। सवेरा होते ही घड़ा लिये कुएँ के पास जा पहुँची और सीढ़ियों से नीचे उतर गयी।

उसे एक खोखले में रत्नहार दिखाई ही दिया। उसे हाथ में लेकर देखती ही रही, एक साथ ऐसे बढ़िया हार को देखने से उसका सर चकराया और वह संभल न सकने के कारण पानी में गिर पड़ी।

उसकी चिल्लाहट सुनकर लोग दौड़े आये और उसे कुएँ से बाहर निकाला। उस वक़्त भी उसके हाथ में रत्नहार था। सब ने उसे देख लिया। इसलिए बहुत जल्द यह ख़बर राज भटों को मालूम हो गयी। पिछले दिन ही रानी का रत्नहार खो गया था, इसलिए राज-भट चोर की खोज में लगे हुए थे।

पिछले दिन रानी को जो पेट दर्द हुआ था, यह बात सच्ची थी। रानी का इलाज करनेवाला वैद्य भी कोई दूसरा न था, वह वही था जिसके साथ माणिक्य वर्मा का पुराण कथा के स्थल पर परिचय हुआ था। उसीने रत्नहार की चोरी की थी। वह यह सोचकर पुराण-कथा के स्थल पर भीड़ में घुस गया था कि राजभट उसे पहचान कर पकड़ लेंगे। उसने सोचा कि नगर द्वार को पार करके जाते समय द्वारपाल उसकी तलाशी लेंगे, इसलिए उसने उस हार को उस कुएँ में छिपा रखा था। उसने गलती यही की कि उसने गप्पे हाँकनेवाले से बातें कीं।

माणिक्य वर्मा ने अनेक प्रकार से समझाया कि वह चोर नहीं है। मगर राजा ने उसकी एक न सुनी। उसे ही चोर ठहरा कर ख़ूब उसकी मरम्मत करायी। उस दिन से माणिक्य वर्मा की गप्पे हाँकने की बुरी लत जाती रही!

# साहब और चोर

एक बार एक आदमी ने घोड़ों के व्यापारी के यहां से एक घोड़े को चुराने का प्रयत्न किया और वह रंगे हाथों पकड़ा गया।

"तुमने चोरी क्यों की?" घोड़ों के व्यापारी ने चोर से पूछा।

"बाबू साहब! मैं चार दिनों से भूखा हूँ। इसलिए यह पाप करने को तैयार हो गया। मुझे माफ़ करके छोड़ दीजियेगा तो फिर कभी ऐसा काम न करूँगा।" चोर ने दीनतापूर्वक कहा। व्यापारी ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा–"तुम्हें कोई नौकरी भी देना चाहूँ तो तुम बिलकुल असमर्थ जान पड़ते हो?"

"क्या कहा, नौकरी? कैसी नौकरी साहब?" चोर ने आशा भरे स्वर में पूछा।

"बात तो वैसे कुछ नहीं, इतनी आसानी से पकड़े जानेवाले तुम मेरे लिए घोड़े चुराकर क्या ला दोगे?" घोड़ों के व्यापारी ने जवाब दिया।
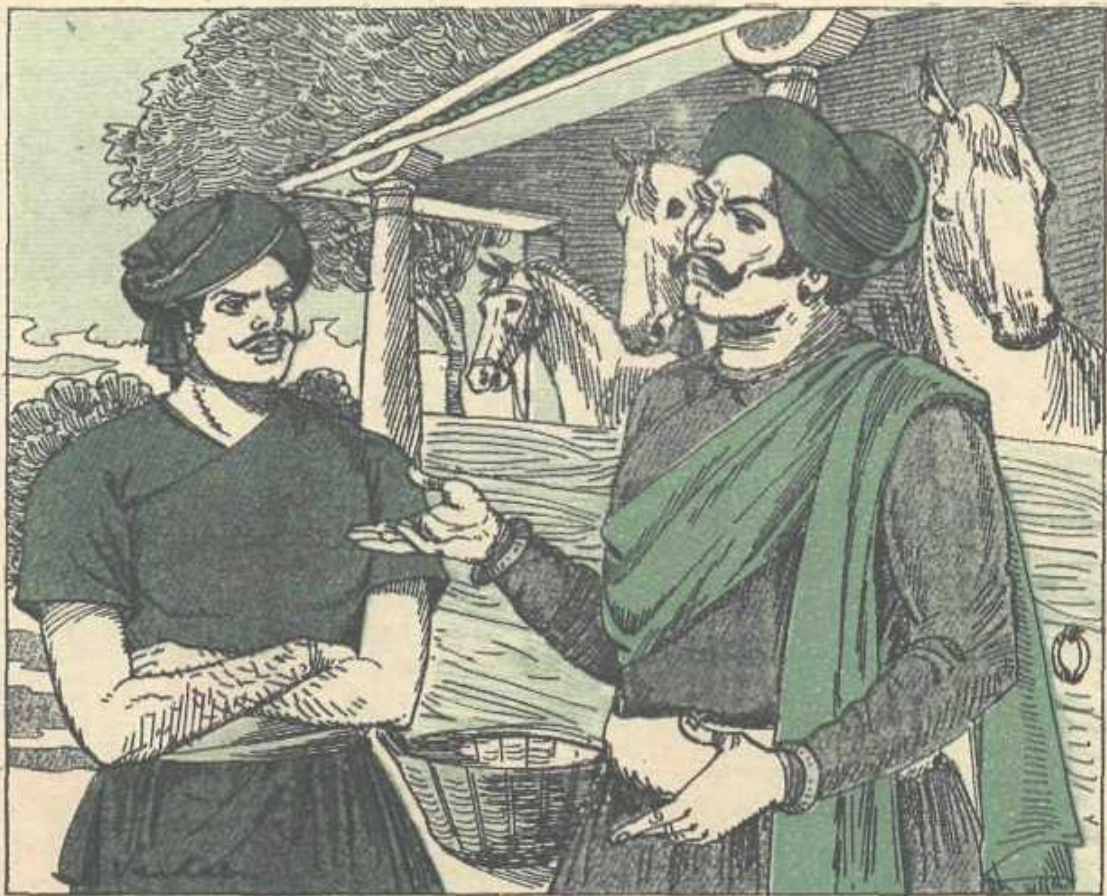
# योग की महिमा

सुंदरपुर का युवराज सुशील कुमार ने अपना वेश बदलकर देशाटन करना चाहा। अपने घोड़े पर सवार हो छे महीनों तक अनेक राज्यों में घूम कर कई बातें सीख लीं। लौटती बार भी अनेक नये देशों को देखते हुए वह राजपट नामक राज्य में जा पहुँचा। वह एक सुंदर देश था। वहाँ के महल, वन और उद्यानों ने युवराज को मुग्ध किया।

सुशील कुमार नगर में घूम रहा था, उसे एक जगह एक ऊँची चहार दीवारी दिखाई दी। द्वारपाल के पास जाकर युवराज ने पूछा तो द्वारपाल ने जवाब दिया कि वह तो राजकुमारी शालिनी का निजी उद्यानवन है, उसके भीतर कोई भी पुरुष प्रवेश नहीं कर सकता है।

लेकिन सुशील कुमार के मन में उस उद्यान को देखने की बड़ी इच्छा हुई। उसने चहार दीवारी की एक बार परिक्रमा की, आखिर उद्यान के पिछले भाग से दीवार को लांघकर उद्यान में जा पहुँचा। वह उद्यान वास्तव में इन्द्र के नन्दनवन से भी ज्यादा सुंदर था। सुशील कुमार थोड़ी देर तक उद्यान के विचित्र वृक्षों तथा सुंदर पुष्पों को देख तन्मय होता रहा। फूलों की सुगंध उसे मत्त बना रही थी। वह एक वृक्ष की छाया में बैठकर अपनी बंसी बजाने लगा। समीप की बांबी में से एक नाग आया और अपना फण फैलाकर नाचने लगा। नाग को देखते ही उसने बंसी बजाना बंद किया। दूसरे ही क्षण नाग उसे डंसकर भाग गया। कुछ ही क्षणों में उसका मुंह नीले वर्ण का हो गया और वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

सुशील कुमार की बंसी की ध्वनि सुनकर अद्यान के बीच अपने क्रीड़ा भवन

ए. सी. सरकार, जादूगर

में रहनेवाली शालिनी आश्चर्य में आ गयी और वह अपनी सखियों को साथ ले वहाँ पर आ पहुँची ।

राजकुमारी ने निकट जाकर देखा तो राजकुमार बेहोश है । शालिनी ने उसकी चिकित्सा करायी । होश में आने पर राजकुमार को अपने क्रीड़ा भवन में ले गयी । वहाँ पर चार दिन तक उसे गुप्त रूप में रखकर उसकी रक्षा की ।

राजकुमारी के निजी उद्यान में प्रवेश करना ही बड़ा अपराध है । राजा या राज्य के अधिकारियों को इसका पता लग गया तो वे कठिन दण्ड देंगे । इसलिए उसे गुप्त रूप से अपने क्रीड़ा भवन में रखकर अपनी सखियों के द्वारा राजकुमारी को उसका इलाज़ कराना पड़ा । अलावा इसके जब उसे यह मालूम हो गया कि वह राजकुमार एक देश का युवराज है और उसका दिल साफ़ है, इसका अनुभव करने पर शालिनी ने युवराज के प्रति स्नेहभाव प्रदर्शित किया । चार दिनों के भीतर उन दोनों के बीच गहरा स्नेह पैदा हुआ और दोनों ने परस्पर विवाह करने की शपथ भी ली ।

इसके बाद सुशील कुमार गुप्त रूप से ही उद्यान से बाहर चला गया और अपने बसेरे पर पहुँच कर घोड़े पर अपने राज्य को लौट आया ।

युवराज के आगमन पर उसका पिता बड़ा प्रसन्न हुआ और मंत्री को आदेश दिया कि राजकुमार के योग्य कन्याओं की खोज करें । मगर सुशील कुमार ने अपने पिता से यह नहीं कहा कि उसने अपनी होनेवाली पत्नी का चुनाव कर लिया है । इसका कारण यह है कि वह अपने पिता के सामने मन की बातें कहने में संकोच करता है । इसमे भी खास कारण यह है कि यदि किसी कारणवश उसका पिता शालिनी के साथ विवाह करने की अनुमति न दे तो वह कभी उसके साथ विवाह न कर सकेगा ।

इस कारण से जब उसे मालूम हो गया कि उसके लिए वधू की खोज कर रहे हैं, तब सुशील कुमार अन्न-जल त्याग कर दुर्बल होता गया। मंत्री का पुत्र देवदत्त सुशील कुमार का घनिष्ट मित्र था। उसने सब से पहले सुशील कुमार के मन की वेदना को ताड़ लिया।

देकदत्त के जोर देने पर सुशील कुमार ने अपनी गुप्त प्रणय-कथा का परिचय दिया और अपनी असहाय दशा भी बतायी।

"युवराज, तुम चिंता न करो। यदि आवश्यकता हुई तो हमारे दरबारी जादूगर की मदद से मैं कोई ऐसा उपाय सोचूंगा जिससे शालिनी के साथ तुम्हारा विवाह हो सके।" इन शब्दों के साथ देवदत्त ने युवराज को आश्वासन दिया।

शीघ्र ही अनेक देशों के राजाओं ने अपनी पुत्रियों का सुशील कुमार के साथ विवाह करने की सम्मति देते हुए दूत भेजे। उनमें शालिनी का पिता भी एक था।

मगर राजा और मंत्री ने चर्चा करके जिन तीन-चार राजकुमारियों का चुनाव किया उनमें शालिनी न थी। यह बात देवदत्त ने अपने पिता के द्वारा जान ली। तब देवदत्त ने निर्णय किया कि यदि सुशील कुमार की इच्छा की पूर्ति होनी है तो किसी ज़ादू का प्रयोग करना ही पड़ेगा।"
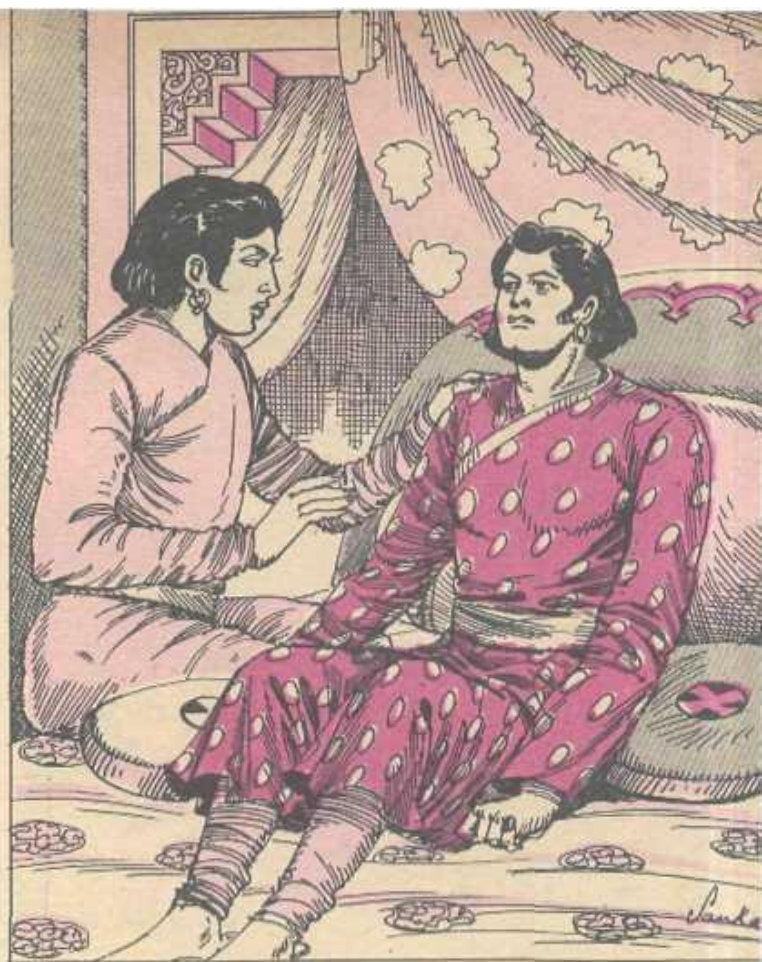
राजा ने मंत्री से कहा-"मंत्रिवर, हमने जिन राजकुमारियों का चुनाव किया, उनकी जन्म-पत्रियाँ मंगवाकर ज्योतिषियों को दिखायेंगे।"

"महाराज, इसके पूर्व युवराज का विचार जान लेना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है।" मंत्री ने समझाया।

"मेरा निर्णय ही उसका निर्णय होगा। वह मेरे सामने कुछ बोलेगा तक नहीं।" राजा ने कहा। राजा तो बचपन से ही उसे अनुशासन में रखता आया है।

"यह सही है, लेकिन यह कोई राजनैतिक निर्णय नहीं है। युवराज की अपनी समस्या है। उसके जीवन से

संबंधित है। उसकी इच्छा जान लेने की मुझे अनुमति दीजिये।" मंत्री ने कहा।

"अच्छी बात है।" राजा ने कहा।

देवदत्त ने सुशील कुमार के पास जाकर उसे बड़ी देर तक समझाया और उसे राजा के सामने ले आया।

"मेरे हृदक-पटल पर जो युवती है, उसका पता लगाकर उसके साथ मेरा विवाह कीजिये"—सुशील कुमार ने कहा।

"यह बात तो तुम्हीं जानते हो। यदि तुम उसका नाम बताओगे तो मैं तुम्हारा विवाह उस कन्या के साथ करने का प्रयत्न करूँगा।" मंत्री ने कहा।

"मुझे मालूम हो, तब तो मैं बताऊँ? मुझे नहीं मालूम! इसलिए आप ही लोगों को इसका पता लगाना होगा।" सुशील कुमार ने उत्तर दिया।

"यह क्या संभव है, युवराज?" मंत्री ने निराश होकर पूछा।

इसपर देवदत्त ने कहा—"मुझे स्मरण है कि एक बार मायाधर ने मुझ से कहा था कि इसके लिए कोई प्रक्रिया है। क्या हम उनसे सलाह लें?"

इस पर मंत्री ने दरबारी जादूगर मायाधर को बुला भेजा। उसके सामने सारी बातें रखीं और कहा—"हमारे युवराज के हृदय-पटल पर जो कन्या अंकित है, उसे वही स्वयं न जाने तो अन्यों के लिए जान लेना क्या संभव है?"

मायाधर ने मुस्कुरा कर कहा—"इसके लिए योग संबंधी एक प्रक्रिया है। युवराज को यदि एक रात भर मेरे घर में योग समाधि में रखे तो मैं भरी सभा में सब के सामने उसके हृदय के रहस्य का उद्घाटन कर सकता हूँ। लेकिन इसके बाद उस कन्या के साथ युवराज का विवाह निश्चय ही करना होगा। वरना युवराज के पागल हो जाने की संभावना है। आप और राजा इस बात के लिए राजी हो जायें

तो मैं अपनी योग-शक्ति का प्रयोग करने के लिए तैयार हूँ।"

मायाधर के मुँह से ये बातें सुनने पर राजा के मन में एक साथ आश्चर्य और संदेह भी पैदा हुए। तब उसने इस विचार से उस योग प्रक्रिया के लिए अनुमति दी कि चाहे युवराज के विवाह की बात कुछ भी हो जाय, मगर योग विद्या को प्रत्यक्ष ही देख लूँ!

एक रात सुशील कुमार ने जादूगर के घर बितायी। दूसरे दिन उसे दरबार में लाया गया। मंत्री ने सभी राजकुमारियों के नाम एक सफ़ेद कागज़ पर लिख कर ज़ोर से पढ़ सुनाया और वह कागज़ जादूगर के हाथ दिया।

जादूगर ने उस कागज़ को एक थाली में रखकर जलाया, उसका भस्म बना कर अपने हाथ में लिया। युवराज का कुर्ता उतरवाकर नग्न छाती पर कागज़ के भस्म को मल दिया। शीघ्र ही युवराज की छाती पर "शालिनी" नामक अक्षर दिखाई दिये। सब लोग आश्चर्य चकित हो कोलाहल करने लगे।

"बाक़ी कार्य आप लोग कीजिये!" मंत्री से ये बातें कहकर जादूगर अपने आसन पर जा बैठा।

राजा ने शालिनी के साथ युवराज का विवाह करके अपने वचन का पालन किया। विवाह के दिन की रात को सुशील कुमार ने शालिनी को एक साबून भेंट किया।

"यह कैसी भेंट है? क्या इससे क़ीमती चीज़ आपको नहीं मिली?" शालिनी ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"इस साबून की मदद से ही मैं तुम्हारे साथ विवाह कर सका। जादूगर मायाधर ने इसी साबून से मेरी छाती पर तुम्हारा नाम लिखा, उस पर भस्म मलकर अदृश्य रूप में रहनेवाले तुम्हारे नाम को लोगों पर प्रकट किया। इस प्रकार इस योग प्रक्रिया के रूप में पिताजी के मन में विश्वास पैदा न करते तो पिताजी मेरा विवाह तुम्हारे साथ करने के लिए तैयार न होते।" सुशील कुमार ने समझाया।
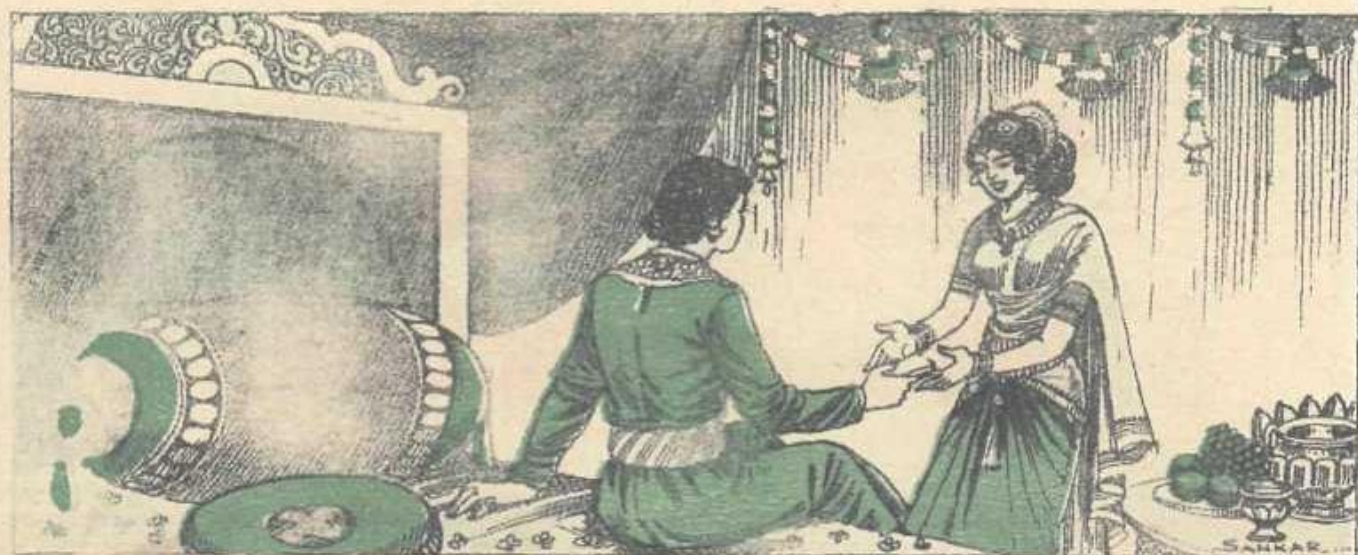
# शर्त

कांचनपुर का राजा बड़ा धर्मात्मा था। उसकी प्रजा भी ईमानदार थी। राजा के कोई संतान न थी, इसलिए राजा के साथ प्रजा भी बड़ी दुखी थी।

यह बात सत्य है कि अनेक धर्मात्माओं के बीच एक दुष्ट लाभ पाता है। ऐसा एक दुष्ट व्यापारी कांचनपुर में रहता था। उस व्यापारी ने एक दिन अपने एक गरीब पड़ोसी से कहा-"मैं एक मांत्रिक को जानता हूँ। वह तुम्हारे मन की बात कह सकता है। यदि तुम दस सिक्के मुझे दोगे तो मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊँगा।"

"इसके लिए मांत्रिक की क्या आवश्यकता है? मैं तुम्हारे मन की बात बता सकता हूँ।" गरीब ने जवाब दिया।

"क्या दांव लगाओगे?" व्यापारी ने पूछा।

"अगर मैं तुम्हारे मन की बात न बता सकूँ तो मैं अपनी सारी संपत्ति तुम्हें दूँगा। यदि बता सका तो क्या तुम अपनी सारी संपत्ति मुझे दे दोगे?" गरीब ने शर्त लगायी और व्यापारी ने मान लिया।

"हम दोनों के लिए एक मध्यस्थ की जरूरत है। इसलिए राजा के पास चले चले।" गरीब ने कहा। दोनों ने राजा के पास जाकर अपनी शर्त की बात बतायी।

गरीब ने व्यापारी से पूछा-"तुम इस वक्त यह सोचते हो कि राजा की संतान ज़रूर हो जाय! है न?"

व्यापारी ने मान लिया और अपनी सारी संपत्ति गरीब आदमी को दे दी।

# महाभारत
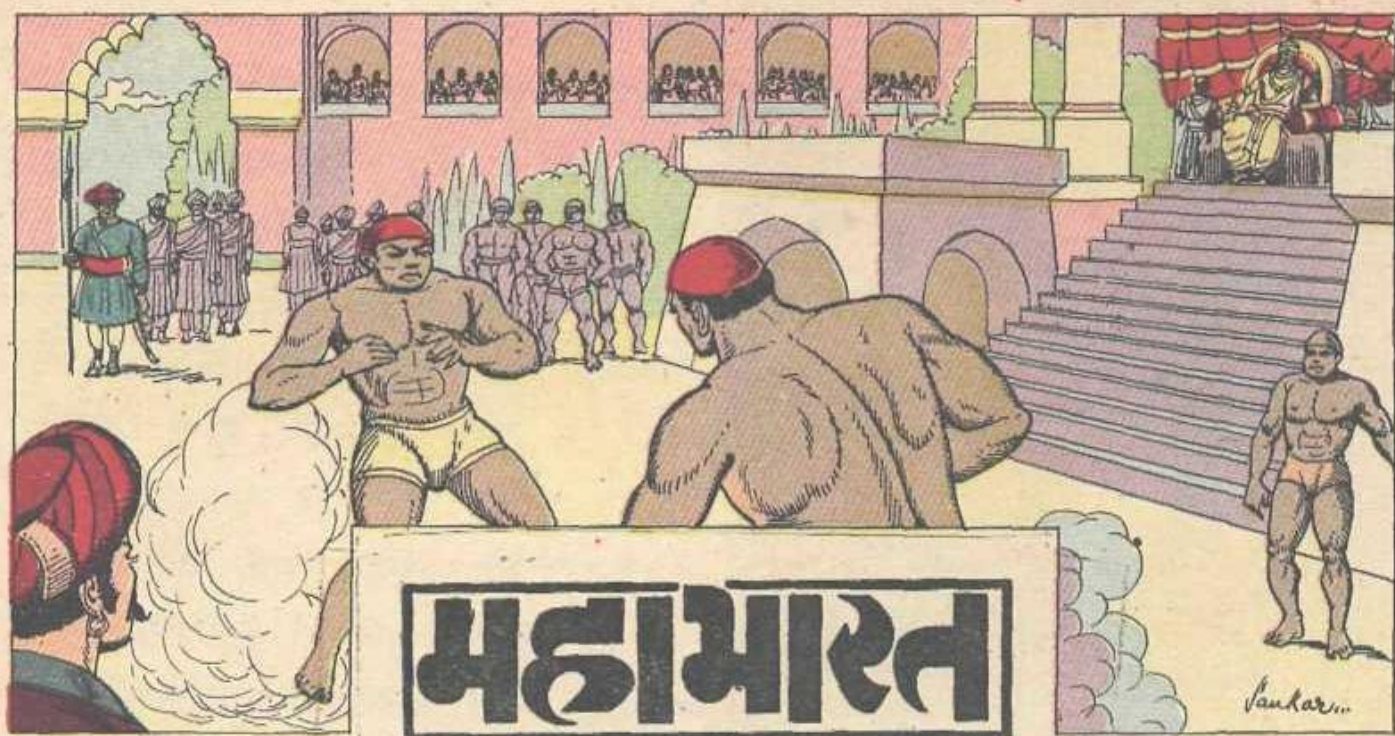
पांडव तथा द्रौपदी राजा विराट के यहाँ अज्ञातवास कर रहे हैं। युधिष्ठिर पांसे खेलकर जो धन जीतता, उसे अपने भाइयों में बांट देता। भीम जो तरह-तरह के मांस पकाता, उन्हें सबको खिलाता। अर्जुन को अंत:पुर में जो कपड़े मिलते, उन्हें सब में बांट देता था। नकुल के अश्वपोषण पर प्रसन्न हो राजा विराट जो पुरस्कार उसे देता, उन्हें वह सब भाइयों में बांट देता था। सहदेव दूध और दही देता। द्रौपदी अपने सभी पतियों का ख़्याल रखते हुए ऐसा व्यवहार करती जिससे उनका रहस्य प्रकट न हो जाय!

इस प्रकार चार महीने बीत गये। उस वक़्त मत्स्यदेश में ब्रह्मोत्सव मनाया जा रहा था। उस उत्सव में भाग लेने देश-देश के मल्ल आये हुए थे। राजा विराट मल्ल-युद्ध में अधिक अभिरुचि रखता था। इसलिए मल्ल-युद्ध कराकर मनोरंजन कर लेता था।

उस उत्सव में आये हुए सभी मल्लों में जीमूत बड़ा बलवान था। वह सबको मल्ल-युद्ध के लिए ललकारता था। बाक़ी मल्ल उसके साथ युद्ध करने से डरते थे। इसलिए विराट ने अपने रसोइया भीम को बुलाकर जीमूत के साथ युद्ध करने का आदेश दिया। राजा के आदेश का तिरस्कार करना उचित न समझकर भीम ने मान लिया।

भीम और जीमूत दो मत्त हाथियों की भांति लड़ने लगे। इस भयंकर युद्ध को देख

## ३९. कीचक का अट्टहास

अर्जुन ने अंतःपुर की नारियों के द्वारा गीत और नृत्यों का प्रदर्शन कराकर राजा को प्रसन्न किया। हठी घोड़ों पर क़ब्ज़ा करके नकुल ने राजा को प्रसन्न किया और अपार धन पुरस्कार के रूप में प्राप्त किया। इसी प्रकार सहदेव ने सांढ़ों को क़ब्ज़े में करके पुरस्कार प्राप्त किये। लेकिन अपने पतियों को राज दरबार में तरह-तरह की यातनाएँ भोगते देख द्रौपदी मन ही मन बहुत दुखी हो जाती थी।

इस प्रकार पांडवों के अज्ञातवास का एक वर्ष लगभग पूरा होने को था। उन दिनों में सिंहबल नामक कीचक की दृष्टि द्रौपदी पर पड़ी। कीचक राजा विराट का साला था और उसका सेनापति भी। वह रानी सुधेष्णा के यहाँ द्रौपदी को देख उसके सौंदर्य पर मोहित हुआ और अपनी बहन से बोला-"मैंने इस युवती को आज तक यहाँ पर नहीं देखा। इसके सौंदर्य ने मुझे मोहित किया है। अप्सारा जैसी यह रूपवती कहाँ से आयी है? ऐसी रूपवती से सेवा लेना ठीक नहीं हैं। यदि यह मेरे घर आयगी तो मैं इसकी पूजा करूँगा।"

प्रेक्षक सब परम आनंदित हुए। भीम ने जीमूत को पकड़कर ऊपर उठाया और चक्र की भांति उसे घुमाया। इस दृश्य को देख सभी मल्ल आश्चर्यचकित हो गये। इस तरह बड़ी देर तक भीम ने जीमूत को घुमाया और अंत में उसे जमीन पर दे मारा, जिससे जीमूत ठण्डा पड़ गया। जीमूत को मारने पर भीम को विराट ने अनेक पुरस्कार दिये।

भीम की शक्ति और सामर्थ्य को देख राजा विराट ने अन्य मल्लों के साथ ही नहीं, बल्कि शेर, हाथी और सिंहों के साथ भी भीम को लड़वाया और वह आनंदित हुआ। उन युद्धों को देखने के लिए अंतःपुर की स्त्रियाँ भी जाया करती थीं।

इसके बाद कीचक अपनी बहन रानी सुधेष्णा से विदा लेकर चला गया, मगर एक बार द्रौपदी को अकेली देख उसके सामने अपनी इच्छा प्रकट की।

द्रौपदी ने कीचक से कहा–"तुम्हें ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता। मैं दूसरों की पत्नी हूँ। तुम्हारे मन में ऐसी कामना लाना हानिकारक है।"

"तुम मेरा तिरस्कार करोगी तो पछताओगी। इस राजा और राज्य का सारा भार मुझ पर है। धन-संपदा में, रूप और यौवन में भी मुझसे बढ़कर योग्य व्यक्ति इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। ऐसे व्यक्ति मुझे अपने गुलाम बनाकर सुख भोगो, तुम दासी बनकर दुख क्यों झेलती हो?" कीचक ने समझाया।

इस पर द्रौपदी ने नाराज़ होकर कहा–"तुम मुझ पर से अपने मोह को न हटाओगे तो तुम्हारे प्राणों के लिए खतरा है। मेरे पांच गंधर्व पति सदा-सर्वदा मेरा ख्याल किया करते हैं। उन्हें यदि यह बात मालूम हो गयी तो तुम्हारी मौत निश्चित है। उनसे कोई भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता।"

द्रौपदी के मुँह से ये बातें सुनकर भी कीचक हताश नहीं हुआ। बल्कि द्रौपदी पर उसका मोह बढ़ता ही गया। वह फिर सुधेष्णा के पास जाकर बोला–"बहन, तुम किसी भी उपाय से सही, द्रौपदी को मेरी अपनी न बनाओगे, तो मैं ज़िंदा नहीं रह सकता। मैंने उसे कई तरह से समझाया, लेकिन उसका मन बदल नहीं रहा है।"

रानी सुधेष्णा अपने बडे भाई की यह बुरी हालत देख पिघल उठी और बोली–"भाई, सैरंध्री तो मेरी आश्रिता है। मैंने उसे वचन दिया है कि उसकी रक्षा करूँगी। उसने पहले ही मुझे बताया था कि पांच गंधर्व उसके पति हैं। तुम तो मेरे भाई हो, इसलिए यह रहस्य मैं तुम्हें बता रही हूँ। सैरंध्री के प्रति मोह बढ़ाकर अपने प्राणों के साथ खिलवाड़ मत करो।"

"बहन, एक हज़ार गंधर्व भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। मुझ जैसे रूपवान पर उत्तम से उत्तम पतिव्रता भी मोहित हो जायगी। मेरे वैभव को देख ज़रूर सैरंध्री

का मन बदल जायगा। तुम किसी भी उपाय से सही, उसे मेरे अनुकूल बनाकर मेरे प्राण बचा लो।" इन शब्दो के साथ कीचक अपनी बहन से गिड़गिड़ाने लगा।

"अरे पापी! तुम अनुचित कार्य करने की इच्छा रखते हो और उसका साधन मुझे बनाना चाहते हो? तुम्हारे पाप का अंत तुम्हारे साथ न होगा, बल्कि वह हमारे सारे वंश को ही ले डूबेगा। तुम घर लौट कर ताड़ी और मिष्टान्न करवा दो। उन्हें लाने के लिए मैं सैरंध्री को तुम्हारे घर भेज दूँगी। तुम अपनी होशियारी से उसका मन बदल सकते हो तो बदल लो।" रानी सुधेष्णा ने समझाया।

कीचक तुरंत अपने घर चला गया। भक्ष्य, भोज्य और पेय तैयार करवा कर द्रौपदी का इंतजार करने लगा।

इसके बाद सुधेष्णा ने द्रौपदी से कहा– "सैरंध्री, मुझे बड़ी प्यास लगी है। तुम कीचक के घर जाकर पीने के लिए कोई चीज़ लेती आओ।"

"महारानीजी, मैं उनके घर नहीं जा सकती। आप जानती हैं कि वे कामवासना से पीड़ित हैं। मैं अगर वहाँ जाऊँ तो वे अवश्य मेरा अपमान करेंगे। आपके पास कई दासियाँ हैं। किसी एक को भिजवा दीजिये।" द्रौपदी ने उत्तर दिया।
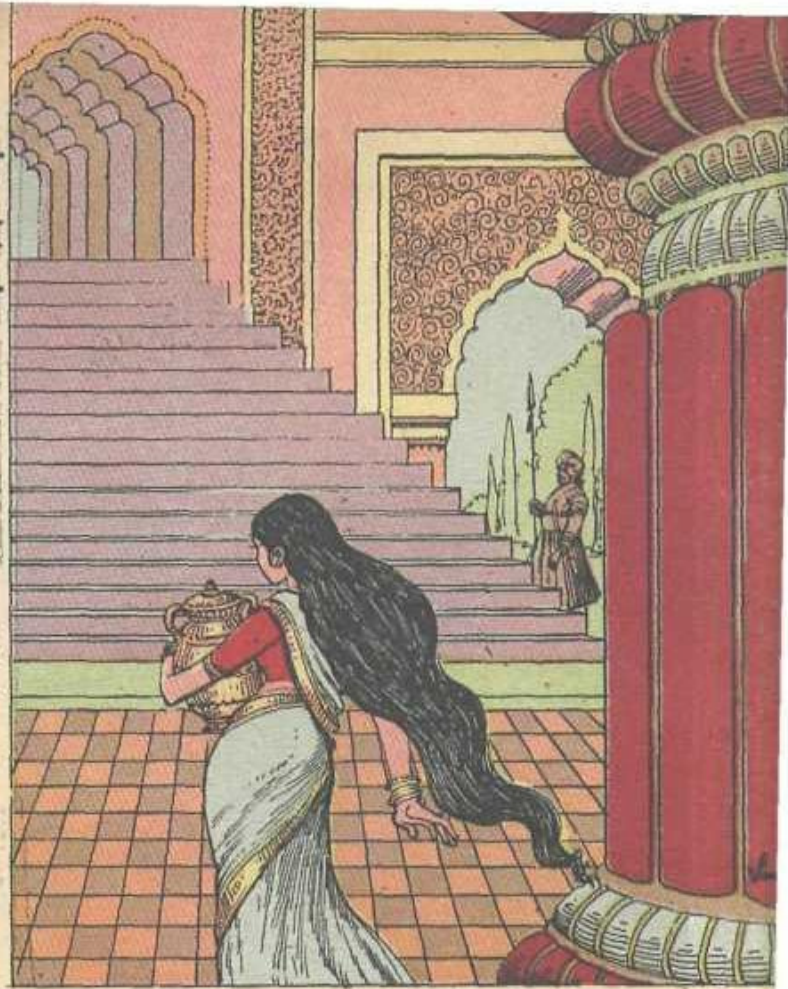
"अरी, जब मैं तुम्हें ख़ुद भेज रही हूँ, तब क्या वह तुम्हारा स्पर्श करने की हिम्मत कर सकता है?" इन शब्दों के साथ सुधेष्णा ने द्रौपदी के हाथ में एक सोने का पात्र दिया। लाचार हो कर द्रौपदी वह पात्र लेकर कीचक के घर चली गयी। उसे देखते ही कीचक बड़ी प्रसन्नता से बोला–"सुंदरी, तुम्हारा स्वागत है। तुम मेरी प्राणेश्वरी हो और स्वयं मेरे पास आयी हो? मेरी इच्छा की पूर्ति करो, सुंदर वस्त्र पहन लो, रत्नाभरण धारण कर लो, मेरे साथ ताड़ी पीकर सुख पूर्वक रहो।"

"महारानी ने मुझे ताड़ी लाने को भेज दिया है। उन्हें बड़ी प्यास लगी हुई है।

तुरंत ताड़ी दिला दीजिये तो मैं चली जाऊँगी।" द्रौपदी ने उत्तर दिया।

"ताड़ी मैं दूसरी दासी से भेज दूँगा।" इन शब्दों के साथ कीचक ने द्रौपदी का हाथ पकड़ लिया। द्रौपदी घबरा गयी। उसने कीचक को ढकेल दिया और दौड़ कर राजा विराट की सभा में पहुँची। कीचक ने उसका पीछा किया, और राजा विराट के सामने द्रौपदी की वेणी पकड़ ली।

इस अत्याचार को सभा में बैठे युधिष्ठिर, और भीम देख रहे थे। भीम ने कीचक का वध करना चाहा, उसने दांत मींचे, उसका शरीर पसीने से तर हो गया, आँखों से आग बरसने लगी। सामने वाले वृक्ष को तोड़ने के ख्याल से वह उठ खड़ा हुआ।

तब युधिष्ठिर ने भीम के पैर के अंगूठे को अपने अंगूठे से दबाते हुए कहा–"देखो, लकड़ी के वास्ते तुम इस पेड़ को क्यों गिराना चाहते हो? थोड़ी दूर पर और बहुत से पेड़ हैं, उन्हें गिरा दो।"

इस बीच द्रौपदी ने अपने पतियों की असहायता को भांप लिया, तेज दृष्टि से उनकी ओर देखा, तब राजा विराट से बोली–"यह दुष्ट इस प्रकार मेरा अपमान कर रहा है, फिर भी मेरे पति जो गंधर्व हैं, महान शक्तिशाली हैं, काल के प्रभाव में आकर मेरी रक्षा करने में असमर्थ हैं। ऐसी हालत में आप मेरी रक्षा कीजिये, लेकिन आप उपेक्षा क्यों दिखाते हैं?" इसके बाद सभासदों की ओर मुड़ कर बोली–"राजा और कीचक तो धर्म को महत्व नहीं देते तो क्या आप सब भी मौन होंगे?"

इस पर राजा विराट ने कहा–"बेटी, तुम दोनों के बीच परोक्ष रूप से न मालूम क्या झगड़ा हो गया, यह जाने बिना मैं धर्म का निर्णय कैसे कर सकता हूँ?"

तब युधिष्ठिर ने द्रौपदी से कहा–"अरी, तुम यहाँ क्यों घूमती हो? अंत:पुर में चली जाओ। तुम्हारे पति कुछ नहीं

कर पा रहे हैं तो इसका कोई कारण होगा! देश और काल का ख्याल किये बिना तुम रो-धोकर सभा भवन में चिल्लाती क्यों हो? जिसने तुम्हारा अपकार किया, उसे तुम्हारे पति जरूर दण्ड देंगे।"

इसके बाद द्रौपदी सुधेष्णा के महल में चली गयी। केश बिखेरे शोक मूर्ति बन कर बैठ गयी, तब उसका यह हाल देख सुधेष्णा ने पूछा–"मालिनी! तुम्हें किसने कष्ट पहुँचाया है?"

"आपने ताड़ी लाने के लिए मुझे भेज दिया। कीचक ने भरी सभा में मेरे केश खींच कर मेरा अपमान किया। इस घटना को देख जिन्हें क्रोध आया वे ही उसका खात्मा करेंगे।" द्रौपदी ने कहा।

उसी समय द्रौपदी ने कीचक का वध कराने का मन में निश्चय कर लिया। उसने घर जाकर स्नान किया, कपड़े धोकर यह निर्णय कर लिया कि भीम ही उसकी इच्छा की पूर्ति कर सकता है! रात के समय वह भीम के कमरे में चली गयी। भीम खुर्राटे लेते सो रहा था। द्रौपदी ने उसके निकट जाकर उसका आलिंगन किया और कहा–"तुम तो मरे हुए की भाँति निर्जीव क्यों हो? जिंदा आदमी कोई भी अपनी पत्नी का इस तरह अपमान होते देख क्या चुप बैठा रहेगा? उठो तो।"

भीम जाग पड़ा, बिस्तर से उठ कर बोला–"तुम इस वक़्त यहाँ पर क्यों आयी हो? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों है? मुझसे कोई काम चाहती हो तो बताओ और जाकर सो जाओ।"

"सब कुछ जानते हुए भी मुझसे क्यों पूछते हो? तुम्हारे भाई तो जुआखोर हैं, इसलिए मुझे ये सारी यातनाएँ भोगनी पड़ रही हैं। मैं राजा विराट की पत्नी की सेवा कर रही हूँ, उल्टे कीचक ने मेरा पीछा करके मेरा अपमान भी किया है। सेवा करके मेरे हाथ कैसे कठोर हो गये हैं, देखो तो सही!" इन शब्दों के साथ द्रौपदी ने अपने हाथ भीम की ओर बढ़ाये।

इस पर भीम ने द्रौपदी से कहा–"उस दुष्ट कीचक ने भरी सभा में जब तुम्हें लात मारी, तभी मैंने वहाँ उसका वध करना चाहा, लेकिन युधिष्ठिर ने मुझे रोक दिया। मुझे आज भी इस बात का दुख होता है कि मैंने उसी दिन दुर्योधन, कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन के सर क्यों नहीं फोड दिया? कुछ दिन और सब्र करोगी तो तुम महारानी बन जाओगी!"

"मैं यह दुख भोग नहीं सकती। फिर से मेरा रानी बनना तो झूठ है। ये सब बातें क्यों? अब जो हुआ है, उसका बदला लेने का कोई उपाय सोचो! विराट यह सोच कर मुझे जाल में फँसाने की कोशिश कर रहा है कि मैं रानी सुधेष्णा से सुंदर हूँ, यह बात जानकर कीचक मेरे पीछे पड़ा। मैंने उसे समझाया भी कि मेरे पांच गंधर्व पति हैं और वे तुम्हारे प्राण हर लेंगे। लेकिन वह मेरी बातों की परवाह नहीं करता है। सुधेष्णा भी उसकी मदद करना चाहती है। उसने ताड़ी लाने के लिए मुझे कीचक के महल में भेज दिया है। उसने मुझे पकड़ना चाहा। मैं भाग आयी, राजसभा में घुस आयी। सबके सामने उस दुष्ट ने मुझे लात मारी। तुम यदि उस दुष्ट का वध न करोगे तो मैं ज़हर खाकर मर जाऊँगी।" द्रौपदी ज़ोर से भीम का आलिंगन करके रो पड़ी।

भीम ने उसके आँसू पोंछे और उसे सांत्वना देते हुए कहा–"तुम्हारे कहे मुताबिक़ मैं कीचक का वध करूँगा। मगर तुम्हें एक काम करना होगा। तुम हंसते हुए कीचक के पास जाओ और इस तरह अभिनय करो कि तुम उसकी इच्छा की पूर्ति करना चाहती हो। नृत्य मण्डप में रात के समय वहाँ कोई नहीं रहता। वहाँ पर एक चारपाई भी है। रात को कीचक को वहाँ पर बुलाओ। मैं सब की आँख बचा कर वहाँ पर कीचक का सर फ़ोड़ दूंगा।"

इस प्रकार रात भर वे दोनों कीचक के वध का उपाय सोचते रह गये।

# शिवपुराण

[१६]

ब्रह्मा ने तारकासुर के पुत्रों की तपस्या पर प्रसन्न हो दर्शन देकर पूछा– "माँगो, तुम लोग कौन से वर चाहते हो?"

"भगवान, हमें ऐसी मृत्यु प्रदान कीजिये जो व्यक्ति उस रथ पर सवार हो, जो वास्तव में रथ नहीं, ऐसे धनुष पर बाण संधान करके हम पर प्रयोग करे जो वास्तव में धनुष और बाण न हो, तो हमारी मृत्यु हो जाय। अलावा इसके हमें समस्त प्रकार की विद्याएँ, तेज, बल, सुख-भोग, त्याग, शिवजी के प्रति भक्ति तथा सोने, चान्दी तथा लोहे से निर्मित नगर हमारे निवास के लिए प्रदान करें।" तीनों भाइयों ने एक स्वर में निवेदन किया।

ब्रह्मा ने उन्हें ये वर प्रदान किये, तब उनके लिए आवश्यक नगरों के निर्माण करने का कार्य विश्वकर्म को सौंप दिया और तब वे अदृश्य हो गये।

विश्वकर्म ने सोना, चांदी तथा लोहे से तीन नगरों का निर्माण कराकर तारकासुर के पुत्रों को सौंप दिया। वे ही त्रिपुर कहलाये। उन नगरों को वांछित गमन शक्ति प्राप्त थी। वे नगर आकाश में अवस्थित थे। उनमें मकान, पेड़, तालाब, धन और धान्य पूर्ण मात्रा में थे। सोने से निर्मित नगर में तारकाक्ष, चान्दी वाले नगर में कमलाक्ष तथा लोहे से निर्मित नगर में विद्युन्माली अपने निवास बना कर तीनों लोकों पर शासन करने लगे।

उन त्रिपुरों पर क़ब्जा करना इंद्र आदि देवताओं के लिए संभव न हुआ। इसलिए उन लोगों ने ब्रह्मा के पास जाकर विनती

अंतिम पृष्ठ का चित्र

की–"भगवान, त्रिपुरासुर हमें तंग कर रहे हैं। उनके नगर हमारे मकानों पर उतर कर उन्हें ध्वस्त कर रहे हैं।"

"त्रिपुरासुरों की आसानी से मृत्यु न होगी। इसलिए हम लोग शिवजी के पास जाकर उनसे सलाह माँगेंगे।" इन शब्दों के साथ ब्रह्मा देवताओं को साथ ले शिवजी के पास पहुँचे। शिवजी ने उनके अगमन का कारण जानकर कहा–"मैं त्रिपुरासुरों की हत्या नहीं करूँगा। तुम लोग चाहो तो मैं अपना आधा तेज प्रदान कर सकता हूँ। उसकी मदद से तुम्हीं लोग उनका वध कर डालो।"

इस पर ब्रह्मा ने शिवजी को समझाया कि मैंने उन्हें कुछ वर प्रदान किये हैं। इसलिए आप हमारा भी तेज ग्रहण कर डालिये। इसकेलिए ऐसी तीन चीज़ों की आवश्यकता थी जो रथ न हो, ऐसा रथ, जो बाण न हो, ऐसा बाण, तथा जो धनुष न हो, ऐसा धनुष। इसलिए शिवजी ने पृथ्वी को रथ बनाया, वेदों को रथ के अश्व बनाये, सूर्य और चन्द्रमा को रथ के चक्र बनाये, मेरु पर्वत को धनुष बनाया, आदिशेष को प्रत्यंचा बनाया तथा भगवान विष्णु को नारायण अस्त्र बनाकर त्रिपुरों पर उसका प्रयोग किया। तुरंत वे तीन पुर राख बन कर पृथ्वी पर गिर गये।

त्रिपुरासुरों की मृत्यु के बाद जलंधर नामक एक राक्षस जन्मधारण करके समस्त लोकों को सताने लगा। जलंधर का वास्तविक नाम सूकर था। वह हिरण्य कश्यप के दसवें पुत्र अग्नि जिह्व का पुत्र था। उसने ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या करके ये वर प्राप्त किये कि देवता, राक्षस गण, नाग तथा मानवों के द्वारा उसकी मृत्यु न हो, वह जल में निवास कर सके। इन वरों के बल पर उसने आठों दिशाओं पर विजय प्राप्त की, इन्द्र को स्वर्ग से भगाकर तीनों लोकों पर शासन करने लगा।

जलंधर के हाथों में हार कर कैलास से शिवजी तथा वैकुण्ठ से विष्णु भाग गये

और मानस सरोवर में छिप गये। वहाँ पर दोनों ने परस्पर परामर्श करके परब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की। परब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर विष्णु को चक्र तथा शिवजी को त्रिशूल देकर सलाह दी– "तुम दोनों अपने अपने आयुध बदल कर जलंधर को मार डालो।" इस पर शिव और विष्णु बहुत प्रसन्न हुए, अपने अपने आयुध बदल कर जलंधर की प्रतीक्षा करने लगे।

नारद को जब यह समाचार मालूम हुआ तब उसने जलंधर के पास जाकर कहा–"जलंधर, शिव और विष्णु मानस सरोवर में छिपे हुए हैं।"

जलंधर तत्काल मानस सरोवर के पास गया, पानी में डुबकी लगा कर शिव और विष्णु की खोज करने लगा। यह बात मालूम होने पर शिव और विष्णु पानी से बाहर आये और किनारे पर जलंधर का इंतज़ार करने लगे। उस वक़्त शिवजी के हाथ में चक्र तथा विष्णु के हाथ में त्रिशूल थे।

मानस सरोवर को छानने पर भी जब जलंधर को शिव और विष्णु का पता न चला तब जलंधर बाहर आया। उसने किनारे पर उन दोनों को देखा। झट वह उन पर टूट पड़ा। उन दोनों ने जलंधर के दो टुकड़े कर दिये। जलंधर की मृत्यु पर तीनों लोकों के निवासी प्रसन्न हुए।

कश्यप प्रजापति के पुत्रों में विप्रजित नामक एक दानव भी था। विप्रजित के
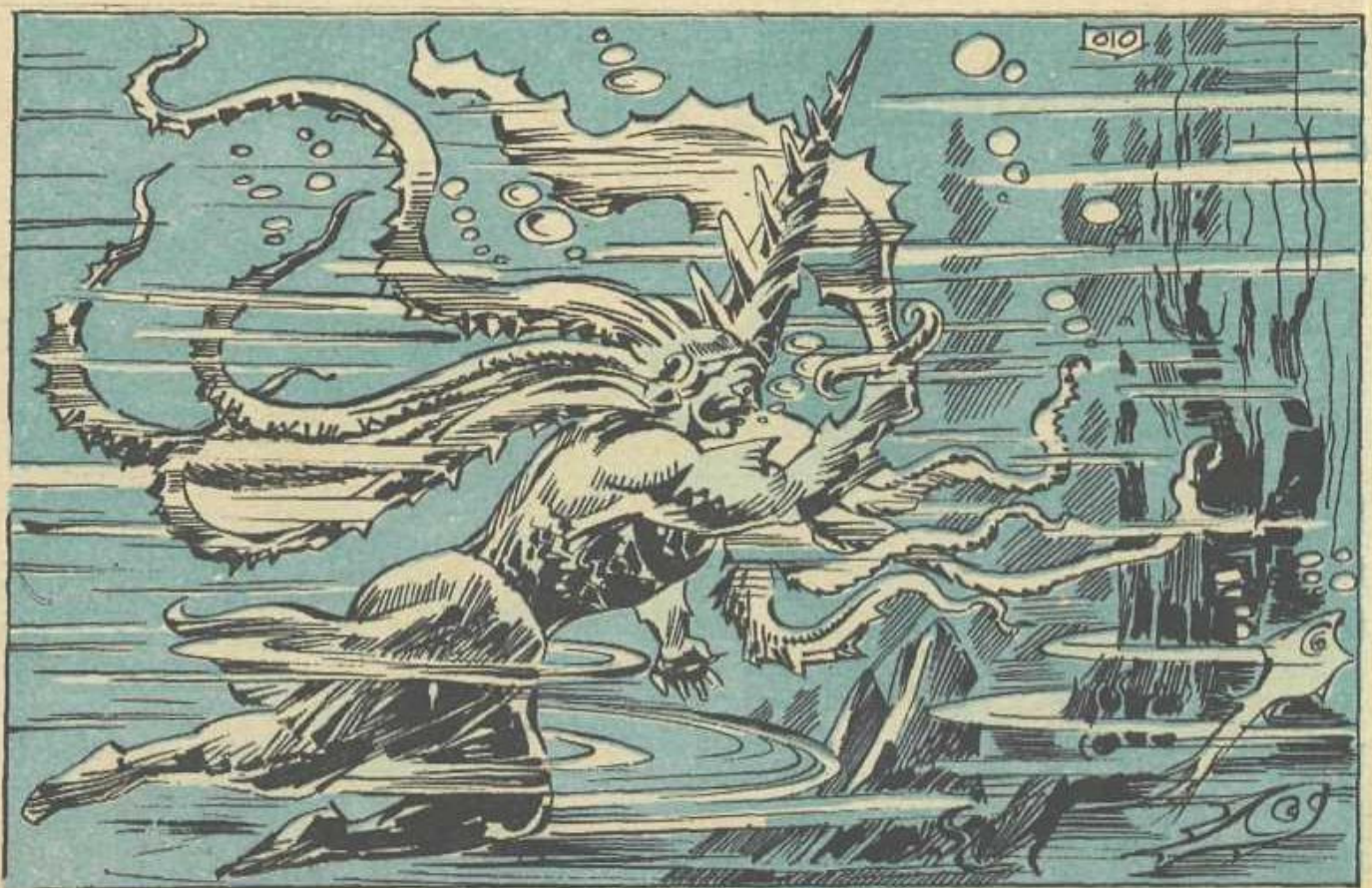
दंभ नामक एक पुत्र था। दंभ विष्णु का बड़ा भक्त था। वह सदा विष्णु की पूजा करता था। उसे बहुत समय तक कोई संतान न हुई। इसलिए वह बदरिकाश्रम में गया और विष्णु के प्रति घोर तपस्या करने लगा।

आखिर विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर दंभ से वर मांगने को कहा।

"भगवन्, मुझे एक ऐसे पुत्र को प्रदान कीजिये जो बल और पराक्रम में आप की समता कर सके, तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर सके, किसी के हाथों में वह हारनेवाला न हो तथा आपके प्रति उसके मन में प्रबल भक्ति हो।" दंभ ने विष्णु से ये वर मांगे।

विष्णु ने दंभ को ये वर दे दिये। इस पर दंभ ने घर लौट कर यह शुभ समाचार अपनी पत्नी को दिया। इसके कुछ समय बाद दंभ की पत्नी गर्भवती हो गयी और एक अच्छे मुहूर्त में उसने एक पुत्र का जन्म दिया। उस का नामकरण शंखचूड किया गया और उसे बड़े ही लाड़-प्यार से पालने लगे।

शंखचूड़ ने शुक्राचार्य के यहाँ समस्त प्रकार की विद्याएँ सीख लीं। बड़े होने पर अपने माता-पिता की अनुमति लेकर विन्ध्याचल में गया और वहाँ पर ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की। वह अन्न-जल त्याग एक ही पैर पर खड़े हो तपस्या करने लगा, इस पर ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर उसे वर मांगने को कहा।

तब शंखचूड ने पूछा-"भगवन, मैं देव, राक्षस, नाग तथा मानव गणों पर विजय प्राप्त करने योग्य बल और पराक्रम प्राप्त कर लूं तथा समस्त प्रकार के सुख भोगूं! ये ही मेरी इच्छाएँ हैं।"

ब्रह्मा ने उसे वे वर देते हुए कहा-"भक्तवर, तुम बदरिकाश्रम में चले जाओ, वहाँ पर तुलसी नामक कन्या तपस्या करते हुए तुम्हें दिखाई देगी। तुम उसके साथ विवाह करके सुखपूर्वक अपने दिन बिताओ।" ये शब्द कहकर ब्रह्मा अदृश्य हो गया।

# १२६. बारहसिंघों का पालन

सोवियत रूस में मास्को नगर की ईशान दिशा में 'कस्त्रोम' नामक प्रायोगिक कृषिक्षेत्र है। वहाँ पर बारहसिंघों को पाला जा रहा है। बारहसिंघों को पालतू बनाकर उनके जीवन व आदतों का अध्ययन किया जा रहा है। मादा बारहसिंघों के दूध निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है। बारहसिंघों के दूध में चर्बी गाय के दूध की चर्बी से तीन गुने अधिक होती है। बारहसिंघे का दूध गाढ़ा ही नहीं होता, बल्कि खुशबूदार भी होता है। इस दूध को बिना मथे मक्खन निकाला जा सकता है।

यहाँ पर पाले जानेवाले बारहसिंघे जंगल में स्वेच्छापूर्वक घूमते हैं। उनके लिए ऊँचे घरों की जरूरत नहीं होती। झोंपड़ियाँ और बाड़ियाँ मात्र पर्याप्त हैं। इनकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। मोटा-ताज़ा बारहसिंघे का वजन चार से पांच सौ किलो तक का होता है। ये जानवर जंगल में पायी जानेवाली घास खाकर जी सकते हैं। यहाँ पर पालनेवाले बारहसिंघों को तरकारियाँ तथा चारा भी खिलाया जाता है। इन जानवरों से बढ़िया मांस, दूध, चर्बी, सींग तथा चमड़े भी मिल जाते हैं। इन्हें ढोने के काम में भी लाया जा रहा है।

Photo by Suraj N. Sharma
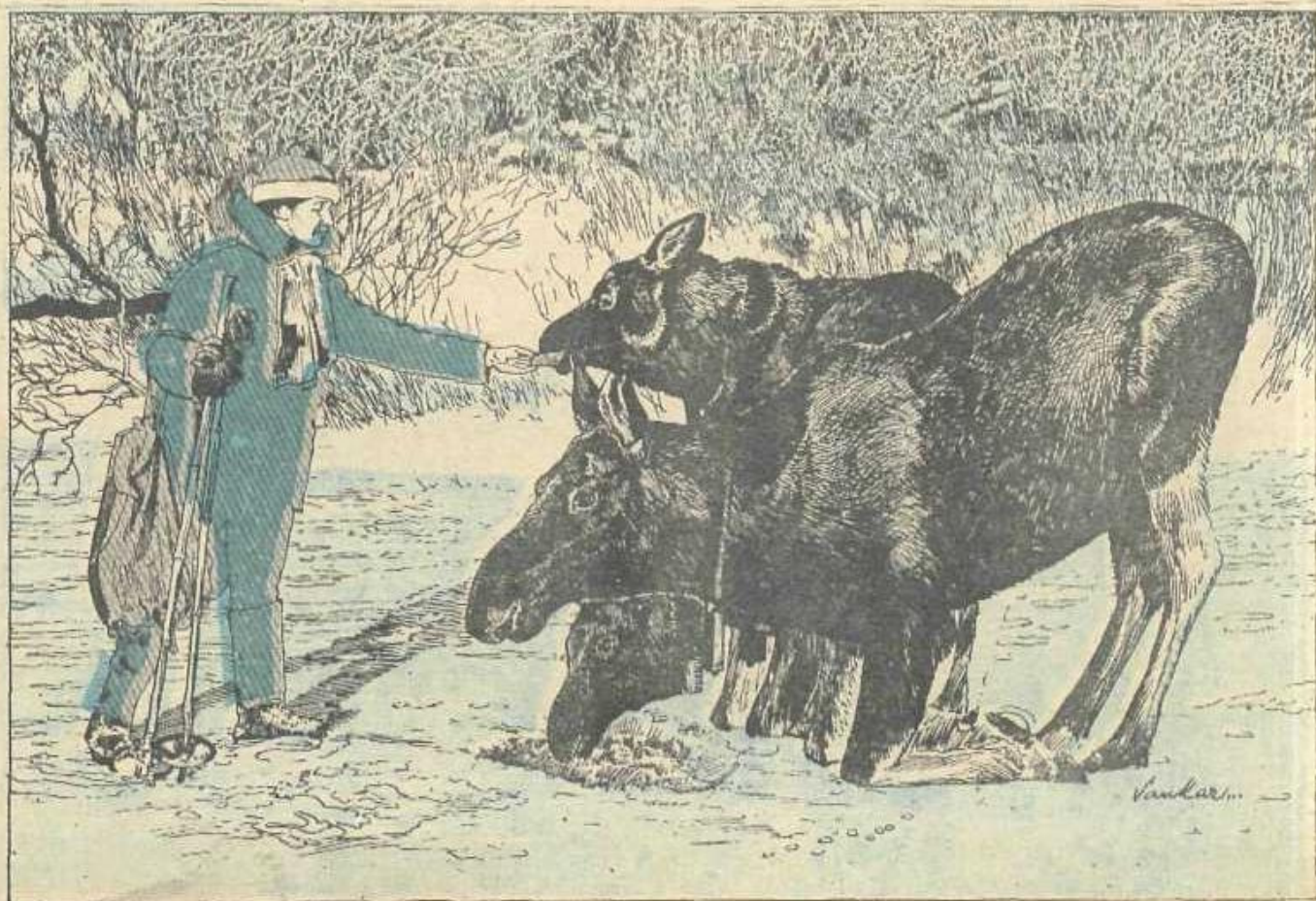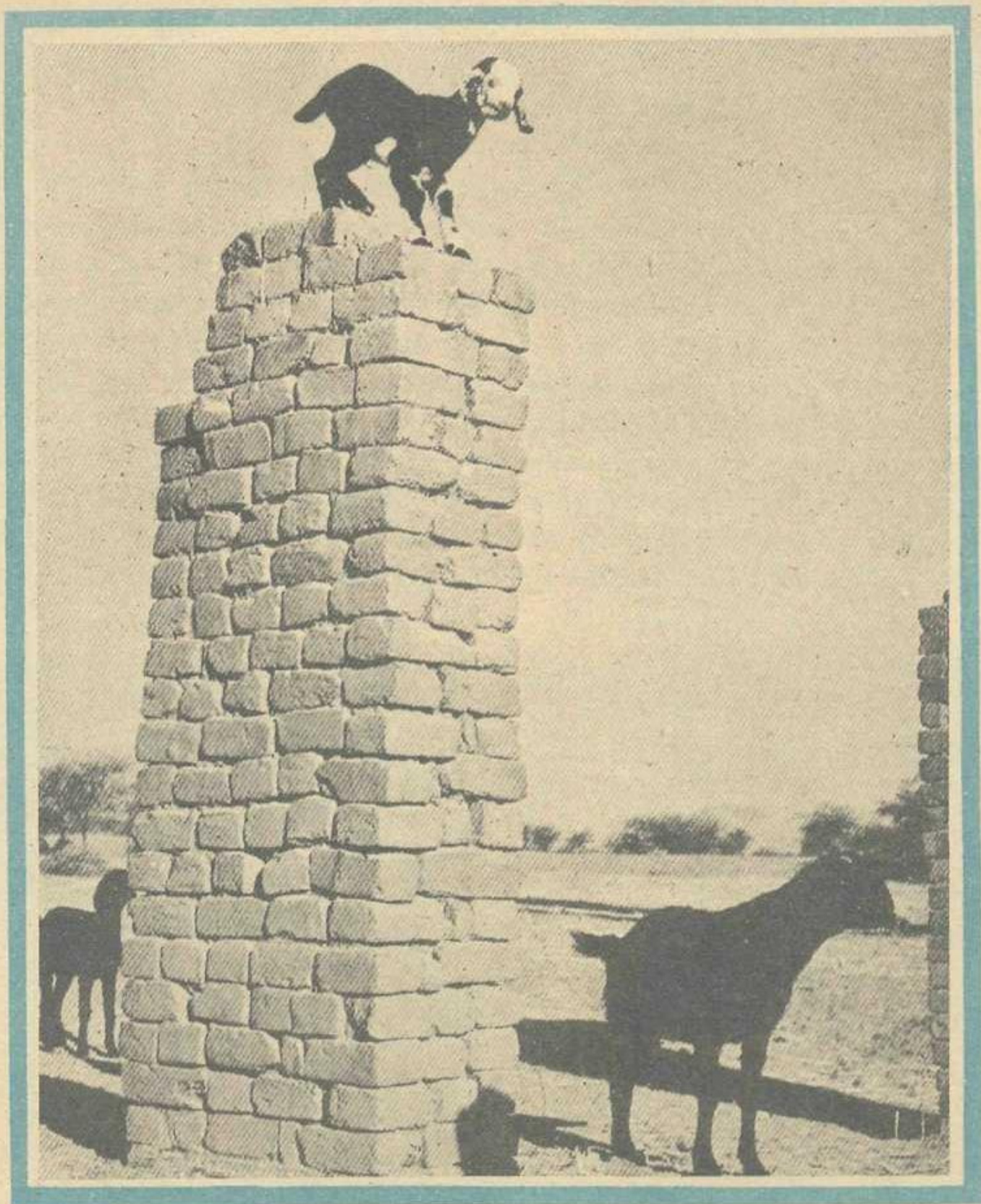
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

मुझे नहीं गिरने का डर।

प्रेषक :
फतहलाल गुर्जर

Photo by Suraj N. Sharma

सूरजपोल, जाटगली
कांकरोली, जि. भरतपुर

शाखाओं पर मेरा घर ।।

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ जून ५ तक प्राप्त होनी चाहिए ।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अगस्त के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

# चन्दामामा

## इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य



दूसरा मुखपृष्ठ
**नाटी बतखें**

तीसरा मुखपृष्ठ
**खेल के बन्दर**

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

चिकलेट्स
मज़ेदार
चूइंग
गम
LEMON
Chiclets
12 PIECES
ORANGE
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
Chiclets
12 PIECES
बच्चों देखो नया कमाल
चिकलेट के
जोकर की चाल
सधा एक पर चिकलेट एक
चार ज़ायका
मज़ा अनेक
नाचो, गाओ, मचाओ शोर
मुझको और, मुझको और!"
Chiclets
लेमन
ऑरेंज
पेपरमिंट
टूटी-फ्रूटी
WH. 3041

हर घर में सबकी मनपसन्द
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट चाय
बेशक उम्दा चाय
ठीक आपके मन मुताबिक
लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट—ज़ोरदार लिकर और बढ़िया खुशबू से दिल खुश हो जायेगा। लिपटन की हिमालयन गोल्डन डस्ट—पीकर संतोष, पिलाकर संतोष। घर में लाइये। घर के लोग भी खुश, मेहमान भी खुश।
LIPTON'S
GOLDEN DUST TEA
LIPTON
सिर्फ़ पैकेट की चाय ही रहती है
तरोताज़ा और खुशबू से भरपूर

बच्चों के लिए स्कूल जाने का समय आ गया है
बिन्नी की स्कूल की पोशाक के कपड़ों में लड़कियों की टयूनिक के लिए केसमेन्ट, लड़कों की पैंट के लिए ड्रिल और ब्लाउज़ व कमीज़ों के लिए पोपलीन उपलब्ध है।
बिन्नी के हर कपड़े की बनावट में मजबूती है और बच्चे इनका कैसा ही प्रयोग करें ये उसका पूरा मुकाबिला करने में समर्थ हैं। सफेद, नीले, हरे, सुरमई आदि सभी रंग स्कूल द्वारा निर्धारित पोशाक की आवश्यकता पूरी करने के लिए सुलभ हैं।
अपने नजदीक के एकमात्र बिन्नी व्यापारी की दुकान या प्रदर्शन कक्ष में कृपया पधारें।
बिन्नी टिकाऊपन का नाम
BCCM-3A/72 HIN

टैबी और स्मगलर्स

टैबी एक दिन चैन से मछली पकड़ रहा था... लेकिन
मिल गई... मिल गई। अरे यह क्या है ?

किसी को पैकेज मिल गया। पकड़ लो उसे!
घड़ियाँ! स्मगलर्स यहीं कहीं होंगे।

पुलिस को ख़बर देना मेरा फ़र्ज़ है... ओह!

जाना बहुत दूर है और मैं थक गया हूँ।

याद आया। मेरे पास एनर्जी टैब्स हमेशा होती हैं।

लो मैं पहुँच गया। अब पुलिस को ख़बर कर दूँ।

कप्तान, उधर देखो, स्मगलर्स वहाँ हैं।

शाबाश टैबी, इतना बड़ा काम तुमने किया कैसे ?
सीधी बात है। एनर्जी टैब्स फ़ौरन शक्ति देती हैं।

स्वादिष्ट नारंगी व अनन्नास की सुगंध वाली
ग्लैक्सोज़-डी
एनर्जी टैब्स
थकान फ़ौरन मिटाती हैं!